



वर्ष १० : अंक ६] तंत्री-यीमनवाल गोकुणदास थाठ [क्रमांक ११७

विषय—६ रुप न

१	'संगीत जने जैन साहित्य' के विषयमें कुछ विशेष बातेः	श्री अगरचन्दजी नाहटा ८४८ खातु २
२	धोधार्घांदरनां जिनभवित्वे : पू. लु. भ. श्री. धुर्धरविजयल	१५५
३	ज्ञैनदर्शननेता अनेकान्तवाह : पू. अंगमाल व्रेमयंद थाठ.	१५६
४	जैन इतिहासमें कांगड़ा : डॉ. बनारसीदास जैन	१७१
५	धन सार्थवाह : पू. उ. भ. श्री. सिद्धिभुनिज	१७५
६	हठबांक प्राचीन शैतिलालिक रथानो : पू. लु. भ. श्री. न्यायविजयल	१८३
७	आतरसु-आस्थ श्री वामपुरुषजिनविनिति : हेटन येन. आर. दाखरी	१८८
८	प्रवयन-प्रश्नमाला : पू. आ. भ. श्री विजयपद्मसरिणि	१९८
९	'आर्य वसुधारा' के सम्बन्धमें विशेष ज्ञातव्य : श्री अगरचन्दजी नाहटा	१९९

लवान्नम-वार्षिक ऐ इष्यिया : छूटक थालु अंक-त्रिं आना

‘संगीत अने जैन साहित्य’के विषयमें कुछ विशेष बातें

लेखकः—श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा

‘संगीत अने जैन साहित्य’ शीर्षक लेख ‘श्री जैन सत्य प्रकाश’के गत ८ वें अंकमें छपा है उसमें प्रो. हीरालालजी कापडियाने संगीत संबंधी जैन उल्लेखोंका निर्देश किया है। इस सम्बन्धमें जो विशेष बातें मेरी जानकारीमें हैं नीचे दी जाती हैं—

(१) इस सम्बन्धमें २ लेख पहले भी प्रकाशित हो चुके हैं: १—‘भारतीय संगीतम् ऐतिहासिक अवशेषक’ लेखक—अध्यापक नारायण मोरेश्वर स्वरे, प्रकाशित ‘पुरातत्व’ वर्ष १ अंक ३, वर्ष २ अंक १ के पृ. २९ से ३५ तक जैन संगीत साहित्यकी चर्चा की है। २—‘कुछ जैन प्रन्थोंमें संगीत चर्चा’ लेखक—वी. राघवन् एम, पी.एच. डी। प्रकाशक—‘जैन सिद्धान्त भास्कर’ भा. ७, किं. १।

(२) संगीत विषयक एक अन्य उपयोगी दिग्म्बरीय जैन प्रथा “संगीत समयसार” त्रिवेन्द्रम् संस्कृत सिरिज त्रावणकोरसे प्रकाशित है। इसके रचयिता पार्श्वदेव हैं। इस प्रथका विशेष परिचय ‘जैन सिद्धान्त भास्कर’ के भा. ९ अं. २ भा. १० अं. १ में प्रकाशित है।

(३) सुधाकलशरचित संगीतोपनिषद्सार की ४ प्रतियें बीकानेर स्टेटकी अनूप संस्कृत लायब्रेरीमें विद्यमान हैं, जिनके आधारसे इसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—इस प्रथमें ६ अध्याय हैं जिनके नाम व श्लोकोंकी संख्या क्रमशः नीचे दी जाती है—

- १ गीतप्रकाशनो प्रथमोद्याय, श्लोक ९४.
- २ प्रस्तरादिसोपाश्रयताल्प्रकाशनो नाम द्वितीयोद्याय, श्लोक ९८.
- ३ गणस्वररागादिप्रकाशप्रकाशनो तृतीयोद्याय, श्लोक १२७.
- ४ चतुर्विधवाद्यप्रकाशनो नाम चतुर्थोद्याय, श्लोक ९९.
- ५ नृत्यांगोपांगप्रत्यंगप्रकाशनो पंचमोद्याय, श्लोक १४१
- ६ नृत्यपद्मतिप्रकाश नाम षष्ठोद्याय, श्लोक १५२.

इस प्रथकी प्रशस्तिमें ही मूल संगीतोपनिषद् सं. १३८० में रचनेका उल्लेख है। मूल प्रति अभी मेरे अवलोकनमें नहीं आई। किसी सज्जनको प्राप्त हो तो उसका परिचय प्रकाशित करें।

(४) अन्य कई जैन विद्वान भी संगीतज्ञ हुए हैं, पर उन्होंने प्रथ नहीं बनाये, जिनमें नरचंदसूरिजीके संगीतज्ञ होनेका उल्लेख उपर्युक्त ‘संगीतोपनिषद्सार’ में ही पाया जाता है। उपकेशगच्छप्रबंधसे ज्ञात होता है कि देवगुप्तसूरि बीणाशादनमें बड़े ही आसक्त थे। श्रीसंघके निषेध करने पर भी अपनी संगीतप्रियताके कारण उसे न छोड़ सके इसी लिये अंतमें अपने पद पर कक्षसूरिको स्थापित किया, स्वयं पद त्याग कर लाट देशमें चले गये।

अभी थोड़े वर्ष पहले बीकानेरके कई यति संगीतके विशेषज्ञ माने जाते थे। उनके बनाये हुए रागरागिणीके पद आज भी जैनेतर संगीतज्ञ भी बड़े प्रेमसे गाते हैं। जिनसमुद्रसूरि आदिने रचित रागमाला भी उपलब्ध है। समयसुंदरजीने जिनचंदसूरिगीतमें ३६ रागिणीके नामोंका समावेश किया है। व अन्य एक स्तवनमें ४४ रागोंका नामनिर्देश किया है।

॥ अर्हम् ॥

अखिल भारतवर्षीय जैन शेताभर मूर्तिपूजक मुनिसमेलन संस्थापित
श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समितिनुं मासिक मुख्यपत्र

श्री जैन सत्य प्रकाश

वर्ष १० || विक्रम सं. २००२ : वीरनि. सं. २४७२ : ई. सं. १६४५ || क्रमांक
अंक ९ || ऐठ शुक्रि. ६ : शुक्रवार : १५ भा जुन ११७

धोधाखंहरनां जिनभंहिरो।

लेखक—पूज्य मुनिमङ्गाराज श्री हुर्धरविजयल

श्री नवभृंडा पार्थ्यनाथ प्रकृती ग्रन्थालयपूर्णे प्रतिभाथी शोबतुं धोधा नगर सागर किनारे वसेकुं छे. एक समये जेना किनारे सेंकडे जडाले नंगरातां, ज्यां वेपार धर्मघोषाकार चालतो, जेनी जहोजलाली देशविहेश प्रसिद्ध हती, ज्यांनी उन्नति अने समृद्धि समाजवती 'लंकानी भाडी ने धोधानो। वर' 'हीरा धोधी जर्डि आव्यो ने उले हाथ हार्दि आव्यो' वगेरे कडेवतो गवाती, ज्यां ज्ञेन्धर्मानी जगृति पूर्णं ज्ञेशमां हती, एज धोधानी रिथति आने घेठनक छे. ज्यां भोटीभोटी भडेलातो हती त्यां भंडेरो छे, ज्यां जनता क्लरव करती हती त्यां पक्षीना शण्हो पछु नथी संभालातां. छतां पुस्यसधोरे श्री जिनेश्वर प्रकृतानां आचीन सात भन्दिरो तथा उक्तिभावाथी भन्दिरोनी साचवण्ही करनारा आवडाना लगभग ७५ धर धोधामां छे. हात पछु ते तीर्थीनी यात्रा करतां उद्वास अने आनन्द जागे छे. आ देखभां ते भन्दिरोनो परिचय अने जणुवा योऽय ऐतिहासिक हडीकतोनु दूँक हिरुहर्षान उराववामां आवे छे.

१. श्री नवभृंडा पार्थ्यनाथज्ञनुं भन्दिर—गामना मुख्य लागमां आ विशाळ भन्दिर आवेल छे. तेमां प्रवेश करतां आप्णे एक भानान् राजदरभारमां चेसतां होाइये एवो लाव जागे छे. धोधेरानुं, भडुवानुं अने धोधानुं आ भन्दिर—एम त्रणे हेरासरो एक ज शित्पिये—कारीगरे अनाव्या हेवानुं कडेवाय छे. ते त्रणेनी बांधणी पूछु एक सरभी छे. विशाळ शिखर अने विशाळ २५८३८वाणुं आ भन्दिर हूरहूरथी पूछु आंधने आइर्हे छे. भूणनायक श्री नवभृंडा पार्थ्यनाथज्ञ छे. ते प्रतिभा संधार्धी हडीकत आ ग्रमाण्य संभालाय छे. वर्षोपूर्वे—लावनगर शहेर वरयु तेथी पूछु अगाडि—वडवाना एक कुवामां आ प्रतिभाज्ञ हतां. शासनहेवे एक लक्तने स्वप्ने आप्युं क जुदाजुदा नवभृंडावाणा आ प्रतिभाज्ञ कुवामांथी अहार काढी नव हिवस सुधी नवमण्य इडानी लापसीमां (कंसारमा) लंडारी राखवा एट्ले ते नवे अडो संधार्धे प्रतिभाज्ञ अभांड थार्दि जशे. लक्ते ते प्रभाणे कड्युः. परंतु गणुनी झेरे—जनताना आग्रहाथी नव हिवस पूरा थथा पछी काढवाने अहले नवमे हिवसे जेयुं ने प्रतिभाज्ञ अहार काढां. जेके नवे अडो संधार्ध अयेला परंतु एक हिवसनी न्यूनताने कारणे सांधार्येना आंकाच्चा. पूछु न हेखावा जेहर्ये ते हेखाय छे. हात पूछु ते नवे नव आंकाच्चे स्पष्ट जणाय छे. काणान्तरे ते प्रतिभाज्ञ धोधामां पधार्या. हात भावनगरमां श्री आहीश्वर अगवानतुं जिम्बं छे ते धोधाथी आवेल छे.

१६६]

श्री लैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १०

हजु पथु श्री पार्थ्सनाथ प्रभुना शासनदेवी पद्मावतील भावनगर मेटा भन्दिरमां छे, ने श्री आहिनाथ प्रभुना शासनदेवी येकेश्वरील धोधाना भन्दिरमां छे.

श्री नवभंडा पार्थ्सनाथ प्रभु क्यारे प्रकट थया ने धोधामां क्यारे पधार्या तेनी चोक्स भालीती कंधू पथु प्राप्त थती नथी. पथु छेत्का त्रये से! वर्षथी ते अभ्यं धोधामां विराजे छे. एट्ट्वे ते पूर्वे प्रकट थया होनानुं सहज छे. १७१७नी साक्षमां उपाध्याय श्रीयशोविज्यल महाराजे 'समुद्रवङ्गाणु संवाद' धोधामां रचये, तेमां श्री नवभंड पार्थ्सनाथ प्रभुतु स्मरणु क्रेत छे. सं. १७२०नी साक्षमां आली चातुर्भास रहेक उपाध्याय श्रीकुंभरविज्यल गणिना उपदेशथी सक्ल सधी भरावेल धातुभय तीर्थपट्टना लेखमां श्रीनवभंडा पार्थ्सनाथनो उत्सेप छे. ते लेख आ प्रभाषे छे.

संवत् १७२० वर्षे आसो वदि १३ हस्ताकें श्री घोघावन्दिरवास्तव्यसकल-सङ्केन कारितस्तीर्थपट्टः ॥ प्रतिष्ठितः श्रीतपागच्छनायक भट्टा० श्री ५ श्री विजय-देवसूरीश्वर-पृष्ठालङ्कार सकलभट्टारकशिरोमणि भट्टारक श्री ५ श्री विजयप्रभ-सूरिभिः । उपदेशात् महोपाध्याय श्री ५ श्री धनविजयगणि-तच्छिष्य सकल-(पाठक)वाचकशिरोमणि उपाध्याय श्री ५ श्री कुंभरविजयगणि चातुर्मासिकस्थितेन । श्रीनवखण्डपार्थ्सनाथप्रसादात् । श्रियेऽस्तु ।

आ पट धेणु दर्शनीय छे. तेना भध्य भागमां समवसरणु छे. तेनी ज्ञभणी आजुमां श्री शत्रुंजय तीर्थ अने आणु तीर्थ छे. डाळी आजुमां गिरिनाराज, अष्टपद्मावतार अने समेतशिखर तीर्थ छे. उपरना विभागमां वीश विहरमान जिन अने नीचेना भागमां श्री नवपद्म छे. २८० वर्ष पूर्वे लारायेल-२मणीय-धातुभय आ पट काणकमे धसाई गेल छे. छतां आरीकाठिं तपासतां सर्वं २५४ देखाय छे. दरेक तीर्थ उत्तर नाम पथु लणेल छे.

आ भन्दिरमां अन्य पथु प्राचीन अने अमतकारिक अभ्येषे दर्शनीय छे.

२. श्री नेमिनाथ प्रभुतुं भन्दिर—श्री नवभंडा पार्थ्सनाथ प्रभुना भन्दिरनी सन्मुख श्रीनेमिनाथ प्रभुतुं भहिर छे. तेमां पथु प्रतिभाज्जनो परिवार सारा प्रभाष्यमां छे. भीजुं हात्खमां २०-२५ वर्षे पूर्वे धोधाथी माधव-होठ माधव दूर दरियामां आवेल खारभेटमांथी खडक धोवातां एक लोयङ्क प्रकट थयुं ने तेमांथी धणी प्राचीन वस्तुओ नीकणा, ते साथे धातुनां ४० अभ्येषे पथु प्रकट थयां हतां, ते पथु आ भन्दिरमां पध्य शववामां आव्यां छे. तेमानां धाराभरां अभ्येषे १२मा ने १४मा सैकाना श्रीरत्नप्रबसूरिल वगेरे प्राभाविक पुरुषेश्वे प्रतिष्ठित क्रेत छे. प्रतिभाष्ये भेटे भागे श्री पार्थ्सनाथ प्रभुनी छे. दरेक प्रतिभानी एठक धणी आव्य अने आकर्षंक छे.

३. श्री समवसरणुनुं भन्दिर—श्री नेमिनाथ प्रभुना भन्दिरनी ज्ञभणी आजु उत्तर दिशामां समवसरणुनुं भन्दिर छे. तेमां एक धातुभय २मणीय समवसरणु छे ते धापाणुनुं एक समवसरणु तेनी ज्ञ आजुमां छे. अन्ने उपर लेख छे. तेमां एक लेख २५४ छे. अने भीजे धेणु. ज्ञ अस॒५४ छे. धातुनुं समवसरणु संवत् १५११मां गांधारना सधी झरावेल छे. काणकमे आधारनी अवनत स्थितिमां अहों आवेल होता संलव छे. समुद्रमार्गे धोधाथी आंधार अहु नश्च क थाय छे. अन्नेनी उत्तर दशामां अवरज्वर-व्यापार वगेरे सारो फो. ते समवसरणु उपरनो लेख आ प्रभाषे छे-

अंक ६]

धीधार्मदरनां जिनमहिरे।

[१६७

“स्वस्ति श्री संवत् १५११ वर्षे माघ शुद्धि ५ गुरु गन्धारमन्दिरे श्रीमहावीरप्रासादे समवसरणं समस्तश्रीसङ्केनकारितम् ॥

आ मन्दिरमां आ बाजु ऐ आचार्यनी भूतिए छे. ते पछु धर्मी प्राचीन छे. तेमांनी एक सं. १३४४मां भेंड्हातीय श्रावक भरावेल छे. तेना पर लेख लेख मुश्केलीथी नीये प्रभाषे वांची शकाय छे.

सं. १३५४ वर्षे पोष वदि ५ शनौ श्री मोढ़ज्ञातीय.....चन्द्रसूरीणां मूर्तिः ।

आ लेखमां ‘यन्द्रसूरीणां’नी शृङ्खलातमां ऐत्रणु अक्षरे धर्मा ज्ञ अस्पष्ट छे. बहु आरीकाईथी जेतां श्रीहे एम होवानी कल्पना करी शकाय छे. एटेके आ भूति श्रीहेम-यन्द्रसूरिणी होवा संभव छे. भोद ज्ञातीये भरावेल छे, ते पछु तेमां विशेष संगत थाय छे.

बोल भूति श्री धर्मधीरसूरिणी भद्राराजनी छे. तेना पर लेख आ रीते छे.

.....श्रीदेवप्रभसूरिणी श्री धर्मघोषसूरीणां मूर्तिः । मा. साक्षणभार्यालाडिशेयसि पञ्चलया कारिता ।

आ भूतिनी आजुआजु चार साधुओनी आकृतिए. क्लेश छे. पू. आचार्य भद्राराजनी आसपास शिष्ये. कुर्ही रीते ऐसतां तेनो आ आकृतिए. जेतां ज्याल आवे छे. तेना उपर नाम पछु लेखेल छे.

४. प. श्रीसुविधिनाथ अने श्रीशांतिनाथनुं भन्दिर—श्री नवभंडा पार्श्वनाथ प्रभुना भन्दिरनी डाभी ने जमखु आजुमां आ बन्ने भन्दिर आवेल छे. बन्नेमां प्रतिभाज्ञो परिवार सारो छे. श्रीसुविधिनाथ प्रभुनां प्रतिभाज्ञ धर्मा वर्षे पूर्वे लोयरामां हतां, ते क्यारे भन्दिर करी बहार पधराववामां आयां ते कांधि उपलब्ध नथी.

आ पांचे भन्दिरो एक साथे छे. ने स्थानमां आ भन्दिरो छे ते [स्थान धर्म] विशाळ अने रमणीय छे. श्रीनेमिनाथ प्रभुना भन्दिरनी बन्ने आजु लांभी परसाल छे. तेमां एक आजु सामान वगेरे रायवामां आवे छे, बोल आजु यन्दन-सुवड धसाय छे. लां एक लोयरह छे. ते धर्मा बाँडु अने विशाळ छे. तेमां पूर्वे सुविधिनाथ प्रभु हता. नीयेना लेख उपरथी ऐ २५४७ ज्याय छे.

। संवत् १७७६ वर्षे फाल्गुन शुद्धि ९ दिने भ० श्री विजयक्षमासूरिराज्ये पं. रूपविजय पं. भीमभक्तउपदेशात् गोदावन्दिरे मीठा सुन्दरनी शोठाई मध्ये सङ्क आदेशात् दे. चु. धर्मशी वोरा सखजी सिंगजीकेन देवद्रवयेण भोयरं समरापितं भ० श्री विजयरत्नसूरीश्वरशिष्य वाचक श्रीदेवविजयेन संवत् १७८१ का. शुद्धि १३ दिने भोयरपति श्री ८ श्री सुविधिनाथ पधरावितं श्रीः ।

आ लेख लोयरामां एक गजारामां उत्तर विशाळी हिवालना उपरना भागमां छे. लेखमां जाणुवा जेनी केटलीक हकीकतो धर्मी विशिष्ट छे. धीधारामां शेठ काणा भीठानी पेढी छे. संधने सर्व वहीवट ऐ पेढी हराक छे. ते काणा भीठा डाइ ? ऐ एक अत्यारसुधी अणुडिके डायडो हतो. ने ते अंगे जुदी जुदी कल्पनाए. थती हती. कांध क्लेतुं के श्री नवभंडा पार्श्वनाथ प्रभु काणा-स्थाम छे ते भक्तने भीठा इण आपे छे. भाटे शेठश्री आणुदृश्य कल्पाणुज्ञनी पेढी वगेरेनी माझेक शेठश्री काणा भीठानी पेढी एवुं नाम राखेल छे. वजा केटलाएक क्लेतां के काणा भीठा नामना गृहस्थे पोतानी सर्व सम्पत्ति संधने अर्पण्यु करीने पोतानुं नाम राखावेल छे, पछु ते भाटे कांधि पछु पूरावे नथी. परंतु आ

१६८]

श्री नैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १०

लेखयी सत्य वस्तु आ प्रभाषे छे. पूर्वे अहों भीडा सुन्दरज्ञनी शेहार्दि होती. तेमना पुत्र काणा भीडा थथा, ने तेमना नामनी चेही स्थपाणी जे हजु पछु चाले छे.

भीजुं आ लेखमां—अमुक आचार्यना राज्यमां—अमुकनी शेहार्दि भध्ये, संधना आहेशथी वगेरे जे लेखल ते धाण्डूं ज महारत्नुं छे. पूर्वे ए अंधारणु धाण्डूं ज व्यवस्थित हुं. शासनना सआटू आचार्य अगवंतेनांतुं सर्वं शासन चालतुं. गामेगाम नगरशेठांतुं सारँ वर्षस्व हुं. संधनी-महाजननी आगाने सळु डार्ड मान्य राखतु. डार्डने कंधू पथु कार्ये करवुं होय तो त्यांना नगरशेठांनी अनुगानी अपेक्षा रभाती, ने तेथी भर्याहा खडु सारी सचिवाती. हात धर्म अने व्यवहारभां जे शिथिलता-स्वेच्छाचार जेवामां आवे छे, तेमां पूर्वांतुं अंधारणु निर्भूत थयुं—करायुं ए ज प्रभान डारणु छे. व्यवस्थित अंधारणु सिवाय लौकिक राज्यना पायाओ. पणु हचम्यां जय छे तो धार्दिक सांख्य भटे तो उक्तेवुं शुं? भाटे तेने-तेना अंधारणुने भजबूत राखवा—सतत प्रयत्न करवे। जेघिअ.

आ अन्ने परसालना उपरना भागमां विशाळ अने ऊंचा ऐ कुरजा छे. ते धाण्डा भेनोहर छे. त्यांथी दूर दूर दृष्टि इंडी शकाय छे. सागरनी रमणीयता अहोंथी वरापर दृष्ट्याय छे. क्विज्ञाने प्रेरणा आपे एवुं ए स्थग छे. न्यायवाचस्पति-सिद्धान्तविशारदाचार्य श्री विजयदर्शनसूरिय भग्नाने न्यायभांडनभाव उपर रथेल कृपयता नामनी शीकानो भेटा भाग आ स्थगे लेखल छे. आ पांचे भनिहराना भग्नाना भागमां एक तरफ शेठ काणा भीडानी चेही भेसे छे. नलुकमां एक उपाय छे. भडकीने भाये चोधीया भेसवानुं सुन्दर ने रमणीय स्थान छे. त्यां न्याये चोधीया वागतां होय छे त्यारे सांख्यनार थंबी जय एवी सरस जमावट थाय छे.

५. श्री अन्द्रप्रभुस्वामीतुं भनिदर—

अहोनां सर्वं भनिहरामां सौथी प्राचीन आ भनिदर होवानुं क्लेशाय छे. भनिदरनी आगल विशाळ चोक छे. भनिदरनी बांधणी जेतां भग्नाराज कुभारपाले अंधावेल होय एम ज्ञाय छे. आजुआजु भास वस्ती नथी. एकान्तमां आवेल छे. नानी भारीमां थर्दूने अन्दर प्रवेश कराय छे. त्यां डार्ड अव्यात्मा स्थिर थर्दू ध्यान धरे तो. शीघ्र एकाय थर्दू जय एवुं लांतुं वातावरणु छे. श्रीअन्द्रप्रभुस्वामी अतिभाजु पणु सुन्दर ने आर्कूक छे. त्यां एक आजु गेअभमां श्री देवसूरिय भग्नानी पाढुका छे, तेना पर नीचे प्रभाषे देख छे—। भ० श्री विजयसेनसूरियगुरुभ्यो नमः । संवत् १७१६ वर्षे कार्तिक शुद्धि १३ सोमे सं. सप्तरमार्या काकबाई-दिववास्तव्य परमरार-भद्रा० श्री ५ श्री श्री श्री विज-देवसूरीश्वरपादुका कारापिता । तत्पद्मलङ्कार भद्रा० श्री ६ श्री विजयप्रभ-सूरिभिः प्रतिष्ठिता । श्री तपागच्छे पं. श्री शान्तिविजयशिष्य पं. श्री देवविज-गणि-मेघविजयम-पदेशात् ॥

भीजां पणु अतिभाजु वगेरे अहो दर्शनीय छे.

६. श्री उरावला पांख्यनाथनुं भनिदर—

गामना दक्षिण दिशाये आ भनिदर आवेल छे. भनिदर रमणीय अने विशाळ छे. १८२२ नी सालना ऐ श्रीसिद्धियक्षणना गदा त्यां दर्शनीय छे. १८५७ नी सालनी एक आचार्य भग्नानी सुन्दर भूति पणु अहो छे. ते स्थिर करेल होवाथी ने आजुआजु अतिभाजु भग्नाने होवाथी देख वांची शकातो नथी.

અંક ૬]

જૈનહર્ષનનો અનેકાન્તવાદ

[૧૬૬

એ પ્રમાણે આ સાત મન્દિરો અને વિશાળ ઉપાયો વગેરે ધર્માં મકાનોની મિલકત ચેઠી પાસે છે. થીજ પણ વિશાળ ધાર્મિક સ્થાનો અહીં છે. શેઠશ્રી આણંદજી કલ્યાણુણુની બે ધર્મશાળાઓ છે. એક તો સમુદ્ર કિનારે જ છે. હરકાર શેડાણી અહીંના હતાં, તેમનો પણ વિશાળ વડો અહીં છે. ઉપાયમાં પ્રાચીન હસ્તલિખિત પ્રતોનો ઝાંડાર દર્શનીય છે. સમયના પ્રવાહે હાલ તો ધોધાની પરિસ્થિતિ નથીની છે. અવિષ્યમાં પૂર્વ જેવી જાહેરાતાની અનુભવે અને સજનજનમનાનનદીની અને એ જ અભિલાષા.

દાદાસાહેબ, લાયનગર, વિ. સં. ૨૦૦૧ ના વૈ. શુ. ૧૫ ને રવિવાર.

જૈનહર્ષનનો અનેકાન્તવાદ

અનુવાદક :—શ્રીયુત પં. અંબાલાલ પ્રેમથંડ શાહ, અમદાવાદ.

[હિન્દીમાં મૂળ લેખક—શ્રી મંગલહેવ શાસ્ત્રી. એમ. એ., ડી. શીખ (ઓક્સન)]

“ન્યાયકુમુહચન્દ્ર” ભાગ ૨ નું આધિવિચન.]

ભારતીય દર્શનશાસ્ત્રનો ધર્તિહાસ અતિ પ્રાચીન છે. ભિન્નભિન્ન સમયમાં અધિકારી-બેદ્ધી અનેક દર્શનનું ઉત્થાન આ ટેશમાં થયું છે. દર્શય જગતના સેપર્ટથી વિભિન્ન પરિસ્થિતિના કારણે મનુષ્યના હૃદયમાં જે અનેક પ્રકારની જિજ્ઞાસાએ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનું સમાધાન કરવું એ જ ડોર્ચ પણ દર્શનનું મુખ્ય લક્ષ્ય હોય છે. જિજ્ઞાસાભેદથી દર્શનનો બેદ્ધ સ્વાભાવિક છે. લારતીય દર્શનોમાં જૈનહર્ષનનું પણ એક પ્રધાન રથાન છે. અનુભાવી સમજમાં એક મુખ્ય વૈશ્વાષ્ટ્ય એ છે કે તેના આચાર્યોએ પ્રચલિત પરમ્પરાગત વિચાર અને રૂઢિઓથી પોતાને અથગ કરીને સ્વતંત્ર દાખિથી દર્શનિક પ્રમેયોના વિશ્વેષજુની ચેષ્ટા કરી છે. અમે અહીં વિશ્વેષજું શાખદનો પ્રમેય જાણી જેધને કરી રહ્યા છીએ. વસ્તુ-સ્થિતિમાં એક દર્શનિકું કાર્ય જેવી રીતે એક વૈયાકરણ શાખદનું વ્યાકરણ અર્થાત્ વિશ્વેષજું, ન કે નિર્માણ-કરે છે તેની જ રીતે પદાર્થોના સંભદ્ધી ઉત્પન્ન થનારા આપણા વિચારે અને તેના સંભદ્ધીના રહસ્યોનું ઉદ્ઘાટન કરવાનું હોય છે. ‘પદાર્થોની સત્તા અમારા વિચારથી નિરપેક્ષ, સ્વતઃ સિદ્ધ છે.’ આ સિદ્ધાંતને પ્રાયઃ લેઝા ભૂતી જાય છે. આપણે જાણીએ છીએ કે જૈનહર્ષનનો અનેકાન્તવાદ, જેને કે તેની મૂલ લિતિ કહી શકાય તેમ છે તે ઉપર્યુક્ત મૂલ સિદ્ધાંતને લઈ ને જ પ્રવૃત્ત થયો છે.

અનેકાન્તવાદનો મૌલિક અભિપ્રાય એ જ થઈ શકે છે કે તત્ત્વના વિષયમાં આગ્રહ ન રાખવા છતાં ચે તેના વિષયમાં તત્ત્વદ્વસ્થાભેદના કારણે દાખિભેદનો સંભવ છે. આ સિદ્ધાંતની મૌલિકતામાં કોને સદેશ થઈ શકે છે? શું આપણે—

“ શુદ્ધતયો વિભિન્નાઃ સ્મૃતૃતયો વિભિન્ના નૈકો સુનિ-

ર્યસ્ય મતં ન મિજ્ઞમ् ”-[મહાભારત]

“ યસ્યામતં તસ્ય મતં મતં યસ્ય ન વેદ સ: ”

અવિજ્ઞાતં વિજાનતાં વિજ્ઞાતમવિજાનતામ् [કેનોપનિષદ् ૨ । ૩]

ઇસાદિ વચ્ચેનોના મૂલમાં અનેકાન્તવાદ જ પ્રતિપાદક. નથી કહી શકતા? દર્શનનું શુદ્ધ જ સ્વતઃ દાખિભેદના અર્થને પ્રગટ કરે છે. આ અભિપ્રાયથી જૈનાચાર્યોએ અનેકાન્ત-

१७०]

श्री नैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १०

द्वारा दार्शनिक आधार पर विजित दर्शनोमां विरोधभावनाने हडापीने परस्पर समन्वय स्थापित करवाने एक सत्प्रयत्न कर्त्त्वे छे.

अनेक अवस्थाओंथी अहं, सहेव विजित दृष्टिकोणोथी जेवानो अभ्यासी भनुष्य-आपणे डाई पदार्थना अभंड मूल स्वरूपने साचा अर्थमां “गुहाहितं गद्वरेष्टं पुराणम्” कही शक्तिए छाए. “पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि” [यजुर्वेद पुरुषसूक्त]. आ वैदिक श्रुतितु पछु वास्तविक तात्पर्य ऐज छे. अमां सहेव नथी के नैनधर्मनमां प्रतिपादित अनेकान्तवादना आ भौतिक अभिप्रायने समजवाथी दार्शनिक जगतमां परस्पर विरोध तथा कलहनी भावनाओना नाशथी परस्पर सौमनस्य अने शांतितु साम्राज्य स्थापित थर्ह शक्त छे.

नैनधर्मनु भारतीय संस्कृतिने मोटामां भेदुं दान अहिंसावाह छे. जे डे वास्तवमां अने दार्शनिक लोत पर स्थापित एकान्तवादनो ज नैतिक शाखानी दृष्टिए अनुवाह कही शकाय. धार्मिक दृष्टिए जे अहिंसावादने ज नैनधर्ममां प्रथम स्थान देवुं आवश्यक होय तो अमे अनेकान्तवादने ज तेनो। दार्शनिक दृष्टिए अनुवाह कही शक्तिए. अहिंसा शब्दहो अर्थ पछु भावीय सम्यताना उत्कृष्टतुर्कृष्टनी दृष्टिथी लिन भिन डरी शकाय छे. एक साधारणु भनुष्यना स्थूल विचारोनी दृष्टिथी हिसा डाईनो। प्राणु लेवामां ज थर्ह शक्त छे. डाइना भावेन आधात पहेंचाउवाने ते हिसा न कहे. परंतु एक सम्य भनुष्य तो विरुद्ध विचारोनी असहिष्युताने पछु हिसा ज उडेशो. तेनो। सिद्धान्त तो आ ज होय छे ३—

“ अभ्यावहति कल्याणं विविधं वाक् सुभाषिता ।

सैव दुभाषिता राजन् ! अनर्थायोपवद्यते ॥

वाक्रसायका वैद्यनान्विष्पतन्ति यैराहतः शोचति रात्यहानि ।

परस्य नामर्मसु ते पतन्ति तान् पण्डितो नावसृजेत् परेभ्यः ॥ ”

[विदुरनोति २ । ७७, ८०]

सम्य जगत्तो आदर्श विचारस्वातन्त्र्य छे. आ आदर्शनी रक्षा अहिंसावाह (हिसा-असहिष्युता) द्वारा ज थर्ह शक्त छे. विचारोनी संकीर्णता अथवा असहिष्युता धर्षा-देवती जननी छे. आ असहिष्युताने अमे डाई अधकारथी ओडी नथी समजृता. आजे आपणु देशमां जे अशांति छे तेनु एक मुख्य कारण आ ज विचारोनी संकीर्णता ज छे. ग्रामीन संस्कृत साहित्यमां भणी आवतो आनृशंस्य शब्द पछु आ ज अहिंसावादनो घोतक छे. आ प्रकारना अहिंसावाहनी आवश्यकता समस्त जगतने छे. नैनधर्म द्वारा आमां ध्युभरी सहायता भणी शक्त छे. उपर्युक्ता दृष्टिथी नैनधर्म भारतीय दर्शनोमां पेतानु एक विशिष्ट स्थान राखे छे.

चिरकालथी अमारी ऐज हाँडिंक धर्षणा रही छे डे आपणु देशमां दार्शनिक अध्य-यन सांप्रदायिक संकीर्णताथी नीकोने विशुद्ध दार्शनिक दृष्टिथी करवामां आवे. अने तेमां दार्शनिक समस्याओने सामे राखीने तुलनात्मक तथा अतिलासिक दृष्टिना। यथासंबंध अधिकाधिक उपयोग थाय. आ पहिलाना अवलंभनथी भारतीय दर्शनो छमिक विकास समजृ शक्त अने दार्शनिक अध्ययनमां एक प्रकारना सम्भवता आवा शक्त.

जैन-इतिहासमें कांगड़ा^१

लेखक:—डा. बनारसीदासजी जैन लाहौर

पंजाबमें जैनधर्म संबन्धी जो यत्किंचित् सामग्री इस समय तक प्राप्त हुई है, उसके आधार पर यह बात निश्चयपूर्वक कही जा सकती है कि यहां जैनधर्मका आगमन बहुत प्राचीन कालमें हो गया था और यहां इसका इतिहास भी बड़ा उज्ज्वल और गौरवशाली रहा है।^२ इसके मानने वाले अधिकतर व्यापारी या राज-कर्मचारी रहे हैं जिनके मूल पुरुष यहांके वासी नहीं थे। पंजाबमें जैनधर्म देशव्यापी कभी नहीं हुआ, अर्थात् यहांकी साधारण जनतामें इसका प्रचार नहीं हुआ। लेकिन फिर भी यहांकी जनता जैनधर्मसे सर्वथा अपरिचित भी न रही थी क्योंकि जैन साधु प्रामोंमें ठहरते हुए और उपदेश देते हुए विहार करते थे। इससे कई भव्य ग्रामीण पुरुष इस धर्मसे परिचित हो जाते और कुछ अंशों तक इसका पालन भी करते थे। इसके अतिरिक्त यति या “पूजों”ने भी नगरों और कस्त्रोंमें अपने डेरोंका जाल बिछाया हुआ था। ये लोग वैद्यक और ज्योतिषकी प्रैकृटिस करते थे। इनके द्वारा भी ग्रामीण जनताको जैनधर्मका कुछ २ परिचय हो जाता था।^३

पंजाबमें मिले हुए जैनधर्मके प्राचीन अवशेष यह प्रकट करते हैं कि यहां भिन्न २ समय पर जैनधर्मके भिन्न २ केन्द्र थे। जैसे—तक्षशिला, सिंहपुर, पार्वतिका, नगरकोट (कांगड़ा), लाभपुर (लाहौर) आदि। इससे यह नहीं समझ लेना चाहिये कि उस २ समय जैनधर्म उस २ केन्द्र तक ही सीमित था। इसके अनुयायी और स्थानोंमें भी पाये जाते थे। अपनी संख्याकी अपेक्षा इनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति बहुत ऊंची थी।

सं. १००० से लेकर सं. १६०० तक कांगड़ा बड़ा महत्वपूर्ण जैन केन्द्र रह चुका है। यह नगर रेलके रास्ते लाहौरसे १७० मील पूर्वोत्तर दिशामें स्थित है। इसका अक्षांश

१. इस लेखकी सहायक पुस्तकें—

(1) Sir Alexander Cunningham:

Archaeological survey of India

Report for the year 1872-73; Vol V

(2) Sir John Marshall: **Archaeological survey of India, Annual Report 1905-06.**

(3) **Gazetteer of the Kangra District.** 1926.

(4) मुनि जिनविजयद्वारा संपादित—विज्ञतित्रिवेणिः। भावनगर—सन् १९१६।

२. देखिये—बाबूराम जैन द्वारा लिखित “क्रान्तिकारी जैनाचार्य”में मेरी भूमिका। जीरा (पंजाब) सं. १९९२।

३. देखिये—भावनगरके सासाहिक “जैन”के ३। १०। ४३ तथा १७। १०। ४३ के अंक और “जिनवाणी” का अक्तुबर ४४ का अंक।

१७२]

श्री लैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १०

३२ अंश, ५ कला उत्तर और देशान्तर ७६ अंश, १७ कला पूर्व है। नगरके नामसे जिलेको भी कांगड़ा कहते हैं, यद्यपि अब जिलेका दफ्तर कांगड़ेसे ११ मीलकी दूरी पर धर्मशाला नामक स्थानमें है।

पंजाबका पूर्वी भाग पहाड़ी प्रदेश है। प्राचीन कालमें यह तीन राज्योंमें विभक्त था—
 (१) सिन्धु और जिहलम नदी के मध्यवर्ती काश्मीर तथा उसके अधीन छोटी २ रियासतें;
 (२) जिहलम और रावीके मध्यवर्ती द्विगर्त, दुर्गर या डोगर जिसमें जम्मू और इतर छोटी २ रियासतें शामिल थीं। (३) रावी और सतलुजके मध्यवर्ती त्रिगर्त जिसमें कांगड़ा और दूसरी छोटी २ रियासतें शामिल थीं। अंग्रेजोंके आनेसे पहले यह भूभाग भारतकी प्राचीन शासन—पद्धति और संस्कृतिका एक नमूना था।

एक समय त्रिगर्तके अंदर पहाड़ी प्रदेशके अतिरिक्त जालंधर, दोआब तथा सतलुज नदीके पूर्व सरहिंद तककी भूमि शामिल थी। तब त्रिगर्त और जालंधर समानार्थ थे जैसा कि हेमचन्द्राचार्यने अपने अभिधानचिन्तामणिमें कहा है—

जालन्धरात्रिगर्ताः स्युः । (काण्ड ४, श्लो० २४)

मैदानी भागकी राजधानी जालंधर नगर था, और पहाड़ी भागकी कांगड़ा ।

कहते हैं कि कांगड़ेको राजा सुशर्मचन्दने बसाया था जो पहले मुलतानका राजा था। इसने महाभारतमें दुर्योधनकी ओरसे विराटनगर पर चढ़ाई की थी, लेकिन इस युद्धमें हार कर वह त्रिगर्तकी ओर भाग गया और वहां एक नगर बसाया। उसने अपने नामकी स्मृतिमें नगरका नाम सुशर्मपुर रखा। यह चन्द्रवंशी था और इसके उत्तरवर्ती राजाओंके नामके साथ चन्द्र शब्द मिलता है। कांगड़ेका मूल नाम सुशर्मपुर था और इसका यह नाम वैद्यनाथ—प्रशस्तिमें पाया जाता है।

विज्ञसि त्रिवेणिमें भी लिखा है कि कांगड़ेकी आदिनाथ भगवान् की मूर्ति को भगवान् नेमिनाथके समयमें राजा सुशर्मने स्थापित किया था।

कांगड़ेका प्राचीन नाम भोमकोट भी मिलता है। नगरको भीमनगर कहते थे। वास्तवमें कांगड़ा तो किलेका नाम है इसी लिये जनतामें अक्सर कोट कांगड़ा कहा जाता है। इसका दूसरा नाम नगरकोट है जो किला और नगर दोनोंके लिये व्यवहृत होता था। कांगड़ेके ईदगिर्दके प्रदेशको कट्टौच भी कहते थे।

कांगड़ा शब्दका प्रयोग सुगल बादशाहोंके समयसे होने लगा है और यह कोट और नगर दोनोंको प्रकट करता है। इसका पूरा रूप “कानगढ़” माना जाता है जिसका अर्थ

है “कान पर (बना हुआ) किला”। कहते हैं कि कोट कांगडा जालंधर दैत्यके कान पर बना हुआ है। जालंधर दैत्यकी कथा जिसके नाम पर सारा प्रदेश जालंधर कहलाता है, पवध्युराणके उत्तर खण्डमें मिलती है। जब जालंधर मर कर गिरा तो उसके कान पर कोट कांगडा बना, मुख पर ज्वालांदेवीका मंदिर, पीठ पर जालंधर नगर और पैरों पर मुल्तान बसा।

मेरे विचारमें ‘कानगढ़’ से कांगडा शब्दकी उत्पत्ति संतोषजनक नहीं है। यह तो केवल उच्चारण—साम्यके आधार पर लोक—कल्पना प्रतीत होती है।^४ विज्ञसित्रिवेणिमें, जिसकी रचना सं. १४८४ में हुई, कोट कांगडेके लिये ‘कङ्गदकमहादुर्ग’ शब्द आता है। कोट कांगडा दो छोटी २ नदियों—बाणगंगा और मांझी—के मध्य उनके संगम पर एक लंबे और तंग पहाड़ी टीले पर बना हुआ है। कोटकी चहार दीवारीका घेरा दो मीलसे ऊपर है। कोटकी दृढ़ता उसकी रचना पर आश्रित नहीं, बल्कि पहाड़ी टीलोंके आधार पर है। बाणगंगाकी ओर ये टीले तीन सौ फुट ऊंचे उठते हैं। कोटके अंदर जानेके लिये केवल कांगडा नगरकी ओरसे रास्ता है लेकिन यहां पर नदियोंके मध्यवर्ती भूमि कुछ सौ फुट ही चौड़ी रह जाती है। इस रास्तेके आरपर कोटकी दीवारके नीचे गहरी खाई खुदी हुई है। कोटसे नगर पूर्व की ओर है। कोटके पूर्वभागमें महल, मंदिर आदि बने हुए हैं। यहां सबसे ऊंचे स्थान पर राज—भवन है। इसके कुछ नीचे एक बड़ा चौक है जिसमें अम्बिका देवी और लक्ष्मीनारायणके मंदिर हैं। इनमेंसे लक्ष्मीनारायणका मंदिर सं० १९६२ के भूकंपमें नष्टब्रष्ट हो गया। अम्बिका देवीके मंदिरके दक्षिणमें दो छोटे २ जैनमंदिर हैं जिनके द्वार पश्चिमकी ओर हैं। एकमें तो केवल पादपीठ रह गया है जो किसी जिनमूर्तिका होगा। दूसरेमें आदिनाथ भगवान्की बैठी प्रतिमा है। इसके पादपीठ पर एक लेख खुदा हुआ है जो अब मद्दम पड़ गया है। कनिधम साहिबने इसमें सं. १५२३ पढ़ा है जो महाराजा संसारचन्द्र प्रथमका समय था।^५

यहां कालीदेवीके मंदिरमें कनिधम साहिबने एक और लेख देखा था जो अब गुम हो गया है। कनिधमने उसकी छाप ले ली थी। छापके अनुसार इसके आदिमें खुदा था “ओ स्वस्ति श्री जिनाय नमः”। इसमें सं. १५६६, शक सं. १४१३ का उल्लेख है।

- ४. शायद मूलशब्द “काहनगढ़” हो। क्यों छः सौ बरस हुए राजा कहानचंदने किलेमें ऋषभ-देवकी मूर्तिकी स्थापना की थी।
- ५. यह लेख विज्ञसित्रिवेणिके पीछेका है।

कर्णिंघमकी रिपोर्ट तथा विज्ञप्ति त्रिवेणिकी भूमिकामें शक. १४१३ छपा है। परंतु सं. १५६६ और शक सं. १४१३ का समन्वय नहीं बैठता। सं. १५६६ में शक सं. १४३१ होना चाहिये, इनका अन्तर १३५ वर्षका होता है। कदाचित् १४१३ छापेकी अशुद्धि हो। १४३१ के स्थानमें १४१३ छप गया प्रतीत होता है।

कांगड़ा नगरमें सबसे प्राचीन मंदिर इन्द्रेश्वरका है जिसे राजा इन्द्रचन्द्रने बनवाया था। यह राजा सं. १०८५ और १०८८ में जीवित होगा क्योंकि यह काश्मीरके राजा अनन्तका समकालीन था। मंदिरके अंदर तो केवल शिवलिङ्ग है परंतु इसके बाहर ड्योढीमें बहुतसी मूर्तियां हैं जिनमें दो जैन मूर्तियां सबसे प्राचीन हैं। एक तो वृषभलाङ्घन आदिनाथ भगवान्की बैठी प्रतिमा है जिस पर आठ पंक्तिका एक लेख है।^६ दूसरी मूर्ति भी पश्चासनमें बैठी हुई जिन प्रतिमा है। इसकी गदी पर दो भुजावाली छीकी और एक हाथीकी मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। ये प्रतिमाएं ड्योढीकी दीवारमें बड़ी मजबूतीके साथ लगाई गई हैं। इनका मंदिरसे कोई संबन्ध प्रतीत नहीं देता। किसी अन्य स्थानसे लाकर यहां लगाई गई हैं।

इनके अतिरिक्त एक जैन लेख बैजनाथके मंदिरमें भी विद्यमान है जो नगरकोटसे २३ मील पूर्वकी ओर है। जिस स्थान पर यह मंदिर बना है उसका प्राचीन नाम कीरप्राम था। बैजनाक या बैद्यनाथके मंदिरकी पिछली दीवारमें बाहरकी ओर बहुतसे देवालय हैं। उनके बीच बाले देवालयमें सूर्यकी मूर्ति स्थापित है। परंतु जिस गदी पर सूर्यदेव विराजमान हैं, वह असलमें महावीर भगवान्की गदी होगी क्योंकि उस पर एक लेख उत्कीर्ण है जिसमें बतलाया है कि इस जिनमूर्तिकी प्रतिष्ठा सं. १२९६ में देवबद्रमूरि द्वारा हुई थी। यद्यपि इस लेखका बैजनाथके मंदिरसे कोई संबन्ध नहीं तथापि इससे यह बात निर्विवाद सिद्ध होती है कि उक्त संबन्धमें कीरप्राममें एक जिनमंदिर बना था।

कांगड़ा प्रान्तके जैन अवशेषोंका उपर्युक्त वर्णन गवर्मिन्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तकोंके आधार पर किया गया है। आजसे आठ-दस बरस पहले लाहौर भूजियमके ब्यूरोटर खार्गीय डा. के. एन. सीतारामने त्रिगर्तादेशका भ्रमण किया था और बहुतसे अन्य जैन अवशेषोंका खोज लगाया था। उन्होंने एक दो चौबीसियों, अनेक पृथक् २ जिनमूर्तियों और मंदिरोंके अवशेष देखे। कई जैन मूर्ति और मंदिरोंको हिंदुओंने अपना लिया है। जैसे—बैजनाथ पप-रोलाके रेलवे स्टेशन और डाक बंगलाके दर्मियान गणपतिका एक मंदिर है। डाक्टर साहिबका कहना था कि वास्तवमें वह जैन मंदिर था।

(क्रमशः)

६. देखिये परिचिष्ट।

આ દિ હેવ ના તે ૨ લવ માં નો પ હે લો લવ
ધન સાર્થવાહ

લેખક:-પૂજય ઉપાધ્યાયજી મહારાજ શ્રી સિદ્ધિમુનિજી

[૧] પરૈપકારના પથે

પરૈપકારમાં ને પરમાર્થમાં
 પુષ્યપગલાં ભાડે છે
 મહાસતિ શ્રી ધન સાર્થવાહ.
 પીઠાય છે પડહ આજે
 પરરપરની ચહ્યાર ભાવનાનો,
 ક્ષિતિપ્રતિષ્ઠિતપુરમાં.
 પ્રગટે છે એ પહુંમાંથી
 સમુનજન્યથ સુરનદીના પૂર શા
 ઓદ્ધાર્યના સર્વગામી સૂર.
 પસરે છે વિશ્વઅંધુત્વના બોલ
 એ નિર્બીક સુરમાંથી.
 સૌને પડે છે અવણોના પુરમાં,
 જીવોના જીવનકાર્યની
 સરખી જ સમાનતા આજે.
 ધન સાર્થવાહના એ આમંત્રણુમાં
 નિમંત્રણુ થાય છે જીવન જરૂરતનાં,
 સધળાં ય પૌરજનોને
 માનવતાના અભેદભાવથી.
 સ્વાર્થનો સાધક એ સાર્થવાહ
 પરાર્થની દાંડી પીઠાવી
 પીરસે છે બાંધવતાના બોલ
 સૌની જરૂરતો પૂરવાને;—
 “ પૂરાં પાડવામાં આવશે,
 સાધનહીન દીન હીનને
 અધીય જતનાં સાધનો.
 સૌને ભળા રહેશે
 વિવિધ જતનાં ભાંડાદિ,
 અને તેને વહુન કરેનારાં વાહનો
 મારા સ્વાભાવિક સૌધાર્યમાંથી.
 માનવીઓના જીણું ઉદ્દરને

નહિ રહેશે અલ્પે ય એઓછાશ
 મારા નેતૃત્વના ડેઢારમાં.
 માનવ માનવીનું રક્ષણુ કરે
 એવી માનવતા અનુભવરી તમે
 આ માટીના માનવીમાં બંધુઓ !
 ઇપમાં રંગમાં કે આકૃતિમાં
 સરખાં ધડતર નથી હોતાં
 વિવિધતાપ્રિય વિધાતાનાં.
 કંધાથી હોય પણી સરખાં,
 જગતની જગતાની પ્રતિષ્યકિતો
 પ્રારખનાં સુક્રમતર ધડતર ?
 અર્પણે સૌને સરખો જ
 બાંધવતાના સાથનો હાથ.
 વધારે સ્વશ્રય સમજશે
 ડેર્ચ પણ રીતે સીદાતા સાથીજનો.”
 ‘પ્રાણ જાયે પણ વચન મ જઈ.’
 એવાં હતાં ડિમાચળ શાં
 પહું બાંચેથી ઉચ્ચરેલાં એ વચન.
 ચૌટે ચોક ને ગલીએ ગલીએ
 શીલ્યાં એ વચન અવણોએ:
 શ્રેદ્ધ હતો એ સાર્થવાહ
 સારા ય પૌરજનોને.
 સર્વચા શુદ્ધ હતો
 એ બ્યવહારીનો બ્યવહાર.
 જાણીતાં હતાં સર્વન
 એનાં વિશુદ્ધ જીવિકા ને જીવન.
 દ્વારાયાં હતા વૈભવનાં હુણેં
 સામટી રીતે એ ગંભીર હરિયામાં.
 ચંદ્રાની ચંદ્રાની જ્યામ
 પરૈપકારને જ ઇણતી હતી

૧૭૬]

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ

[વર્ષ ૧૦

અનેડ શ્રીમાન એ શેઠની લક્ષ્યમોયો.
 સર્વ સદાચારોની મહાનદીમોયાનુ
 ઉગમસ્થાન હતો.
 એ મહિમામોટા મહાશય.
 સૌ ડાઈ સેવતું હતું
 પૃથ્વીને પાવન કરતા એ યશોધનને.
 અપાર મનાચો હતો માનવ જાતથી
 એની ઋક્ષિનો જળહળાટ.
 લખો અચો શોભતો હતો
 એને ધેર વાહનનો મહાસાગર.
 સંખ્યાબંધ વહેતાં હતાં ધનજરણું
 એના ધનતા અખૂટ મહાસરોવરમાંથી,
 અને એથી સીચાતાં સેવકોનાં ક્ષેત્રો.
 હતો એ સ્વભાવથી જનવત્તસ્ત્ર,
 અને ભાગ્યાનો લરસાદાર બેરુ.
 ડેવળ કંચને ગાયેલા
 કુલીનતાદિ ગુણોથી જ નંહિ,
 પણ સાહનિક ગુણોની પરંપરાએ
 મૂર્ખુંતાને પામી હતી
 એની અલોકિક લોકપ્રિયતા.
 સામર્થ્ય અને સહગુણુના આડુંણુ
 સાર્થ્વાહના સાર્થનો સાથ સાધવા
 પ્રથળ ભચ્છાયો પ્રગટી હતી
 ક્ષિતિપ્રતિષ્ઠિતપુરના અર્થેચુંએને.
 'વિદેશ વસનારી લક્ષ્યમી' ના માટે,
 ચાતુર્યને ફૂલિત ઇવાને કારણુ,
 પ્રારંધના અવનવા અનુભવ અર્થે,
 એમ જ અન્યાન્ય હેતુથી,
 સાર્થ્વાહે સર્જેલા સાર્થમાં જવા
 યોગ્ય સળવટ સજી રહ્યું હતું
 એ ક્ષિતિપ્રતિષ્ઠિતપુર.
 પડ્યાં હતાં કાર્યમાં પ્રયાણુનાં ધચ્છુકો
 મુસાફરીની અનુકુલતાએ ડેવળવા.

x x x x
 પ્રેરણા પાઈ રહો છે
 વખુંકનોને વાખુંન્યવરસ્થાની

શ્રેષ્ઠી ધન સાર્થ્વાહ.
 આહેય અને સુમધુર વચ્ચેનોથી
 આપે છે આહેશ વાણોતરોને
 પ્રસન સ્થિર રહેરાનો એ.
 વહી રહી છે આગાહિતતા
 સર્વ અનુયરોની યોગ્ય ઉતાવળમાં.
 ધન સાર્થ્વાહની વખારા ને હદ્દપ્રેરણો
 ચૌમેર સાંકડા અની ગયા છે
 વહન કરનારાં વિવિધ સાધનોથી.
 તેનો આપો ય પ્રાસાદ
 આજે સહી અની ગયો છે.
 વાતસદ્ય ટાળી રહી છે
 ધન શ્રેષ્ઠીની વિનીતતા પર
 પ્રેમથી પૂળતા વડીલોની પ્રીતિ.
 વિનીતતા નમી રહી છે નોકરોની
 સાર્થ્વાહના વચ્ચેને શિર ચડાવવા.
 ઓછું બોદ્ધાય છે શાન્તતાથી લાં.
 આચરાય છે ધણું શીધાતાથી.
 પૂળતી હતી ત્યાં સદાની ય
 સભ્યતા અને શિસ્તતત.
 આજે તેનો પ્રવર્તે છે
 સર્વ બ્યાપી મહેતસવ.
 આવતી કાલની પદ્ધી ય બ્યવસ્થા.
 બ્યવસ્થિત થઈ રહી છે પોતે જ.

x x x x

વાત્યો એ બ્યવસાયી દિન,
 અને પ્રયાણુની ઝંખના ભરી
 યાત્રાના ધચ્છુકોની એ રાની.
 બહાણું વાયાં નિર્ધાર્યાં સુસુર્હંતનાં.
 કરાયાં મંગલ કુલ વધુઓથી.
 સુસ્વરોદ્ધનાં પગલાં મંડાયાં
 ધન સાર્થ્વાહનાં રળિયામણ્યા રથે.
 શકુનો સધાયા ઝારી રીતે.
 પ્રસ્થાનાં આલેખાયાં મંબલ.
 ક્ષિતિપ્રતિષ્ઠિતપુરના સુપરિસરે
 આવી મળ્યા સાર્થના યાત્રાળુંએ.

અંક ૬]

ધન સાર્થવાહ

[૧૭૭]

પ્રસ્થાન લેરીના ઉચ્ચ્ય સ્વરી આમંત્રણે.
 રમી રહ્યું છે સૌના મહોયે
 વસન્તપુર અને એનું વાણિજ્ય.
 કરી દીધું છે પ્રયાણું
 વસન્તપુરગામીઓના ઉત્સાહે,
 એમના પ્રયાણુથી ય પહેલાં.
 એલી રહ્યો છે બિડ્દાવલી
 શ્રીમાન શ્રીધન સાર્થવાહના ઉત્સાહની
 એ સૌના હૈયાને ઉત્સાહ.
 આવી ચડે છે ડોર્ડક જ તક
 મનુષ્યના મોંધા જીવનમાં
 કલ્યાણુને કલ્યાણું સમર્પણવામાં.
 ધન્ય પુણ્ય સમય છે અત્યારનો
 આ ધન સાર્થવાહને મારે.
 પાવન કર્યો આચિતો દનો
 સુપટાશ્રી પ્રહેશ
 આચાર્ય શ્રી ધર્મધોષે.
 × × × ×
 હતા એ માનવ જાતના
 મહાન ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મધોષ.
 જીવન સમરસતની સમાનતાના શાસક,
 ને સર્વ દિલ્લિયોના સાપેક્ષ સંગ્રહક—
 શ્રી જૈનશાસનના એ હતા
 એક જવાબદાર સુયોગ્ય પ્રતિનિધિ.
 જળહળી રહ્યું હતું એનું
 પુણ્ય રેખાઓથી અંકિત
 અને પ્રવર લક્ષ્યાણોથી લક્ષ્યિત
 વિશ્વાખ ભર્ય આગ્રસ્થળ.
 નીતરી રહ્યાં હતાં કરણુનાં અમી
 એની કારુણ્યલરી આંભમાંથી.
 આક્ષર્ણીય ભર્યતા હતી
 એના સૌભ્ય મનહર મુખારવિનદમા.
 પ્રતાપને પાડતી હતી
 એની ઘલતેજસ્વી કાયા
 સાર્થવાહના સુસુન્દર પરગૃહાંગણે.
 પ્રકાશને ઝાંકા રહ્યો હતો એ

પ્રતિલાથી પ્રકાશતો જ્યોતિર્ધર્મ.
 જાગે સામે પગલાં જરી રહ્યો હતો
 ક્ષયારનો ય ધન સાર્થવાહ
 ઉમળજ્ઞ જરેલાં સ્વાગત કરવા.
 સાદર ને સવિનય
 સમયો ઉચિત આસન
 આચારના એ આચારને એણે
 ઔચિત્યને અનુચરતી વિનીતવૃત્તિથી.
 કરી ય દિલ્લિય ન પડી હતી
 આવી પુણ્ય પધરામણી
 સાર્થવાહના પોતાના જગતા જીવનમાં.
 અનણ્યો હતો એ
 જિતરેલી આ મહાતુલાવતાનો.
 પણ સમજ્યા વિના ન રહે
 સુમહાનુભાવોના માહાત્મ્યને
 શુભાત્માની અંતઃકરણ વૃત્તિઓ.
 પૂછાયાં આગમનનાં કારણ
 ઔચિત્ય ને આતિથ્યભાવથી.
 યાચના કરી આચાર્ય
 સાર્થવાહની સ્વાભાવિક ધર્યાની:-
 “ સાર્થની સાથે વહેશે
 વસન્તપુરના લાંબા ને વિકટ પંથમાં
 અમારા સાંદુસંધનાં
 સહા ય વહેતાં સાંદુતાનાં જીવન.
 તમારા સાર્થના ટેકાએ
 નહિ નડે અટવીના અપવાહો અમને.
 અત્યુત્કૃષ્ટ મંગલને વરે
 તમારો સાર્થ ને વસન્તપુરની વસુધા.”
 × × × ×
 લાખાના ભગવાન હતા
 આચાર્ય શ્રી ધર્મધોષ.
 તેમની વાણીના વર્ણો વર્ણો
 તરી આવતી હતી
 મોડાશ ને કર્તાય પૂર્વકની—
 અધૂર્વ નિરીહતા ને નિરપેક્ષતા.
 એ મહિમાના સરવરીયામાં

१७८

ज्ञेन सत्य प्रकाश

[१५६ १०]

गणाइूँ इूधेवो सार्थवाह
 आत्मिक शितण्ठानी लहरीओाथी
 आनंदपुलकित बनी गयो।
 मनमां भानी लीहुं अणे
 आजनुं ज्ञवन अनीव धन्य.
 आहरथो ऐली य गयो एः—
 “सैने स-मुख आववा योग्य
 आप योते ज अही पधार्या,
 अने वणा सार्थमां सह पधारेणा,
 ए छे अहो ! अमारां महालाभ्य ! ”
 सूचन करायुं सार्थवाहुथी
 अनाहिना पाचडाने तत्काळः—
 “आ महातुभाव आचार्यश्री,
 संपादित करने निरंतर
 संपूर्णतया अनपानाहि.”
 अग्नानमूलक ने अस्थाने हतां
 आ साहर औहार्यनां सूचन
 ए दातारशिरोभणि शेणां.
 पछु एमां जिडी सुन्दरता हती
 ग्राथमिक लद्दिक बालभावनी,
 अने भार्गतुसारी महामहतानी.
 होय छे झुपायेली शुणसुष्टिमां—
 सुन्दरतामां डवचित् असुन्दरता,
 असुन्दरतामां कवचित् सुन्दरता.
 अनर्थना जूथ उपज्ञवे कठीक
 यशना भटे भरते भानवी.
 भूलेना भार भरेला होय
 अविचारित दाक्षिण्यमां.
 रागदेखना भोरिगो रमे
 भेष्यतना भोटा राक्षसोमां.
 कातिल ऐर भरेलां होय
 ग्रेम-ग्रेमयना औचित्यमां य.
 एमानो एडेय संक्षन न हतो
 आ सहज प्रगटेला भावमां.
 इक्ता ए भावमां हतो
 अति दुर्लभ डार्ह सीधो भागं

भावी आत्मोन्नतिना कमेनो.
 अगीतार्थने असुन्दर भासता
 होषित अन्नाहि प्रहानना ए सूचनमां,
 अंवलेक्षी परिषुम-सुन्दरता
 गीतार्थ ए सुविहित आचार्ये.
 अलिननी धन्यपुण्यवाहुथी
 श्रीमंत सहगुणी ने यशस्वी—
 सार्थवाहुनी ए औहार्यसुन्दरताने,
 अंतरना ऊडाणुमां आचार्यवर्ये.
 सुविधान कर्तुं अक्षरोथी एमणे—
 ‘वाह ! औहार्यनी भावना !
 पणु असंगत छे ए भावना
 सक्तिय अनाववामां
 ज्ञेन मुनिना निर्मल ज्ञवनमार्गे.
 न करेलां न कारवेलां,
 अने संडलपेलां य नहि—
 येवा निरोष अनन्पानाहिथी
 वहे छे संयमज्ञवन
 आज्ञवन सुधीना संयमधारीओाना.
 दुष्कर छतां कर्तव्य छे
 व्यवहारविशुद्धिनां पालन
 विवेकवंता संसारीओाने.
 एथो य वधारे दुष्कर ने सुकर्तव्य
 लिक्षानी विशुद्धितुं पालन
 भधुकर वृत्तिथी यरता महामुनिओाने.
 उपयोग नथी करता एओ।
 छूवा तणाव वावीओ। वगेरेनां
 दीधिलां य सचित जणनो.
 न काम लागे एमने ए
 अभि आहि शब्दथी अनुपहत.
 भोक्तुं अनुपम अभृङ भीज
 शान दर्शन ने यारित.
 धर्मनी काया ए रत्ननयी.
 ए कायाने धारणु करवामां
 सक्ल कारणु प्रुपायुं छे,
 उद्गमाहि अष्टहेष रहित—

अंक ६]

धन सार्थवाह

[१७६

षड् कारणाथी आहारातो—
 सुविशुद्ध आहार.
 भेदभावे ज ज्ञवतानु होय
 विशुद्धभावी लैननी भौनवृत्तिने। :
 सांबणा रखो होतो एकाअताथी
 आचार्यना आचारगत ऐल
 गंभीर ने धीर ए सार्थवाह.
 डॉर्ड्ये आवीने धर्यो आ समये
 सुपक्ष आंभाओथी अरेलो थाण,
 धन सार्थवाहने भेटेहो.
 संभाना रंगशां रंगीलां
 अने अतीव भीडी सुगन्धीथी भयां—
 ए सुमधुर इलोने स्वीकारवा,
 अने ए रीते पोताने अनुग्रह करवा
 विनंती करी आचार्यने
 अत्यंत प्रभुद्वित अनेला सार्थवाहे.
 आचारनिष्ठाते आचार्यथी
 ए विनतिनो अस्वीकार थयो.
 'करी नहि शकीए रपर्शी य अमे
 शक्क नहि लागेला अवां इणनो.
 अना भक्षणी तो वाते य क्यां रही ?
 ए भानुभाव शळेय सार्थवाह !'
 आश्र्यनी रेखाओ बेगी नीकणा
 स्तम्भ अनेला अष्टीना भेणां पर,
 आचार्यनी आहारयोथी
 अने आहार विषयक विवेचनाथी.
 सरी पडया प्रशंसाना ऐल
 आवश्यक घोकता शेठना भेणंभांथी.
 'अहो ! डेवी दुष्क्र वतकारिता
 आ भानुवतधारीओनी.
 अशक्यनिर्वाही आनु ज्ञवन,
 न ज्ञवी शेड प्रभादिए
 एक दिनने भाटे य.
 अपाशे आपते कृत्यतां अनाहि.
 कृपा करो अने साथ पधारो,
 ए भानुभावो । तमे आजे ज.

x x x x

आरंभायां आशा ने उत्साहलयां
 धन सार्थवाहना सार्थनां प्रयाण.
 अगणित वाहनोना लेढने उछाळते।
 जपउयो ए संघने महासागर,
 क्षितिप्रतिष्ठितपुरना पादरथी
 वसन्तपुरना लक्ष्य प्रति.
 साथे विचरवा मांडयुं
 भूर्तिमान चारित्रना भूलोतर गुणुशा—
 सुनियोथी वीटायेला धर्मवीषाचार्ये—
 सार्थना भोखरे घेउ होता
 घेउस्वारोथी विटायेला धन सार्थवाह;
 पाषण होतो तेनो भित्र भाणिकद्र
 तेवी ज रीते वीटायेला घेउस्वार,
 वने पडणे रक्षायेलो होतो ए संध
 शख्यथी सज्ज समर्थं रक्षपालोथी.
 सर्वथा निर्भयता होती एने
 चोरने लूटारोमाथी.
 आतपना निवारणु भाटे धरायलां—
 श्रेवते भयूररंगी छत्रोथी
 भिनी करी होती एलु
 शरद ने वर्षानी रिथति गगनमां.
 अरवामां आव्यां होतां भांड,
 पाडा बण्ड जाट खच्चर ने अर पर.
 गोठवार्ध होती पाणीनी पभालो
 भेदशा श्यामणा महामहिषो पर.
 कीडा करी रव्वा होता जुवानो
 विशाळ ने सुन्दर गाढाओमां ऐडां.
 सार्थना भारे भारथी
 चीस पाडी रही होती पृथ्वी
 वाहनोनां विध विध थता शण्होथी.
 अंधेर व्याप्तु सर्वत्र,
 आ भासंचारनी उडती धूणे.
 घोरी बण्डो ने तेजला घोडाओ,
 उतावण्णां उटो ने अर खच्चरो,
 आगण वधवानी होउ यड्यां होतां ए.
 गाडां भाडीओना चीत्कारथी,

૧૮૦]

શ્રી નૈતે સત્ત્વ પ્રકાશ

[વખ્ય ૧૦

બળહોની ધુધરમાળથી,
અશ્વાદિના વિવિધ રવથી
ને સાર્થકનેના ડેલાહુલથી
ગર્ભ રહ્યું હતું ભૂતળ ને ગગન.
એ નાદથી નાસી નાસતાં હતાં
મૃગ ચમણી આદિ વનનાં પ્રાણીઓ.
દિને દિને નવ નવ સ્થાને
નગરને જીલ્લાં કરતો ને ઉન્જડતો
આ મહાસાર્થસંધ
પડાવનાં ચિહ્નો મૂકી ચાલ્યો જતો.
ઝુટાડતો એ જલાશયોનાં પાણી
પોતાના વિશાળ પડાવના સ્થાને.
ડેટલાક પડાવો પદ્ધા પદ્ધી
સ્પર્ધી કરવા લાગી ઋતુ ય એની.
તળાવો ને નદીઓનાં જળ
એછાં થતાં ચાલ્યાં રાતની જ્યમ
ગ્રીભ ઋતુના અહુ દૈનિક પડાવથી.
અયંકર હોય ઉન્હાળાના દિન,
વિરોધતઃ સુસાફ્રોને મારે.
અભિના ફણકાની જ્યમ
અસદ્ય બની ગયો હતો સૂર્ય.
એ અથગ આગના ગોળામાંથી
તાપના અંગારા જરતા.
વાઈ રહ્યા હતા લુના વાયરા.
સોંસરા પેસી જતાં હતાં સોંયની જેમ
અતીવ આકરાં સૂર્યનાં કિંઘેણો.
અનિની ચૂભી ચૂમતી હતી
દોહની તપ્ત શિલાશી ભૂમિ.
અંગારા બની ગયા હતા કંકરો,
આગના રઘડણો જ અની ગઈ ધૂળ સર્વત્ર
પસીનાના જેણે જેણ શ્રુટતા
અકળાતા ઉકળાતા અંગમાંથી
તાપથી ધુંવાંપુંવા થતા ભનુષ્યોના.
ધરીએ ધરીએ શોષાતા હતા કંઠ,
તાપથી તપ્ત માનવીઓના
અને ભારવાહી પશુઓના.

છાયાની અપેક્ષા રાખતાં હતાં.
માનવીઓ અને પશુઓ ય.
નિરંકુશ થઈ જતા હતા
પાડાઓ અને વૃષભો.
પેસી જતા હતા તેઓ
જળાશયોના કીચર્માં
અને પઢે પડતાં વૃષ્ણોની છાયામાં.
તાપથી કરમાઈ જતા હતા
જાત્ય પશુઓના પાછો.
વનનાં નિષ્ટળ જીવન શુલ્ગરતાં
કુમળો કમળનાણો ને કમલની પત્રો
સફળ જીવનવંતાં અનતાં હતાં
સુકુમાલ રમણીઓના કંઠોદમાં પડીને.
પસીનાથી તરણોળ વખો
આખાય અંગે ચોપરાઈ જતાં,
વિશેષ સુન્દર લાસતી હતી
સ્વભાવસુન્દર સુન્દરીઓ.
જલી કરાતી હતી નવ નવ રીતે
વાયુની ઉષળુ લહરીઓમાં,
કૃત્રિમ શિતળતા.
પંખાઓ વીજાતા હતા,
પાંથેનાં ક્રામળ કરકમણોમાં.
પાલવથી પવનને નાખતી
તાપથી ગલરાયેલી ડો'ક સુગધાઓ
કુતુહલ ઉપજાવતી હતી કામીઓને.
દિને દિને વૃષ્ણને પામતી હતી
કુરાન્ય નીતિના સરળી
ગ્રીભ ઋતુની તાપવ્યસનિતા.
ન ગણુકારતી હતી એ સંતાપશીલા
સાર્થચારીઓના શીતોપચારને.
વિનાશ સંયો હતો એનો
એનાથી જ ઉદ્ભવતા વાતાવરણે.
ધેરાતાં જતાં હતાં એની આગળ
ધીર શ્વામળ વાદળો.
સંતાપનાં વધતાં જતાં પીઠનો
સહી શહેતી નથી કુદરત કચારેય

અંક ૬]

ધન સાર્થવાહન

[૧૮૯

ન્યાયની તુલાને ધરતી એ.
ધૂમવા લાગ્યાં આભામાં
અવર જવર કરતાં વાદળાંએ.
ધાર્યા આવતો હતો
દૂર દૂરથી ગજનાનો હેંકારો કરતો
પરોપકારી મહામેધ,
તેની વિશાલ ક્રમમરમાં
ચમકારા મારતી હતી
વીજળાંએની નગ્ન તલવાર.
આરંભો દીધું ઉકળાટનું મહાયુદ્ધ
શ્રીષ્મન્દતુની તામસી માયાએ.
ન થાયે કદી ય નિષ્ઠળ
ઉદ્ધર દીલનો જાંચેથી ગજનો હતા.
ગજનાના ટંકારની સાથે
ઘેચ્યું એણું પોતાનું ધનદ્વધનુધ.
સંશેહના લાથાને ખાલી કરતાં
વરસાબ્યાં વરસાદનાં દાનશરો
શામળીઓ એ મહામેધરાને.
સર્વથા અંત આણ્યો એણું
સૃષ્ટિના શોષણ ને સંતાપનો.
વર્ષની સ્થાપના થઈ
ધીરજને ધરતી ધરણીપર.
શાંતિની શિતળતા બ્યાપી
મહીતલનાં મનમયૂરોમાં.
પણ જલ(ડ)ત્વ હતું
મહામેધના એ દાનજલમાં.
એક હાથે કંઈ સુંદર સમર્પી
ખોળ હાથે લઈ લેવાની—
પરોપકારના આખ દેખાવો કરતી
સ્વાર્થી કુટિલ રાજનીતિની જ્યબ,
ભરેલ હતા એમાં,
લાભોની સાથ લાખોગળું અલાભો ય,
પ્રગતિની ધર્યા કરતા—
સાગરસમા મોટા સાર્થને મારે.
પરિણ્યું એ લાભધારી—
પેલાં શોષણ ને સંતાપ કરતાં

વધારે અનિષ્ટ લાગ્યાં
આ મેધવર્ણનાં દાન
ધન સાર્થવાહના સાર્થને.
ધીર ધીર ટંકાવા લાગી નગ્ન ભૂમિ
આંખ સોહામણી હરિયાળાથી.
ન'તાં કંઈ મોંધાં વાવેતર
એ અણુષેડાયેલી ભૂમિમાં.
ઉલારાવા લાગ્યાં નદીએ ને વહેળાએ
ધીછરાપળુથી કુલમર્યાદાને તોડતાં.
જીય નીચને સરખા કરવા જતાં
બેઢી નાખ્યા સુખમાર્ગી જલોએ.
અગમ્ય અનાયા કાદવના હૌર્જન્યે
સીધા જાણુંતા સુગમ માર્ગો.
આગળ આગળ પર આંતરી લીધા
આગળ વધવાના સબળાય પંચો.
નિર્મિંદ્યાદ નદીએની કુટીલ નીતિએ
ઉલાડા કરી ધસડી આણ્યા એણું
પાહોના હૈયામાં ઝુંચતા કંટેડા.
ઝુંચાવા લાગ્યાં જાડે જાડે
કલખુંનીઓ કાદવના મોહમાં
સાર્થ સાથેનાં રથગાડાંતાં—
ઝુંચતા પણ અંતે ચંચળ થતાં એકો.
લપસાવા લાગ્યા લપસલું ભૂમિ પર
ભૂમિકાના ધર્મની લીડને ન પકડતા
ઉટના અંગ્રામી પહે.
આગળ વધવાનું અટકી પડ્યું
વરસાદના જગોએ જગવેલા—
ભૂમિની અંતરના અવતના—
ખડઅચડીઓ મલિન સંકલેશોથી.
સૌ ગાડ છેટે જર્ધ પડ્યું
પ્રગતિના માર્ગનું એક પગલું ય.
જલાદિથી ઇધાયેલા પંચો જેતાં
સામયિક પડાવ કર્યો
વર્ષાંદતુ વીતાવવા પર્યંતનો
મહાતુભાવ શ્રીધન સાર્થવાહન.
જાલાં કરાયાં તાત્કાલિક

१८२]

શ્રી લૈન સત્ય પ્રકાશ

[વર્ષ ૧૦

કાર્યસાધક વર્ષાં જોગાં ઉટને.
 જીવતું પડે ભાવિ કલ્યાણુકામોએ
 દેશકાલાદિ પર દીધું દાખિ રાખ્યાને.
 કલ્યાણુ કરે છે સાદ્ય જીવન
 સૌ ડોર્ધને સદ્યાને માટે
 વિશેષતઃ પરાવદાંથી દુઃખસમયે.
 સ્થિરતા ઝરી આચાર્ય ધર્મધૈર્યે ય
 સુસંયમી મુનિગણું સાથે,
 માણિબક્રદે સમપોલા—
 નિર્જંહુ કુરીરના ઉપાશ્રયમાં.

× × × ×

ગરીથ તવંગર સૌને સરખી રીતે
 પાલન કરતો હતો ધન સાર્થવાહ.
 જેઠું પુરું પાડતો હતો,
 હોથ તેનું રક્ષણું કરતો હતો,
 એ પોતાની ઝરણ સમજુને.
 આશાની નજરે સૌ તેને જેતા,
 પોતાની નજરે તે ઝરણને જ જેતો.
 લોકા તેને સાર્થનો સ્વામી માનતા,
 તે પોતે પોતાની જતને
 સાર્થનો સેવક માનતો.
 પ્રયાણ કયું ત્યારથી જ
 સાર્થના આખા સંચાલનને
 બહુ આરોક દાખિથી નિહાળતો હતો તે.
 પ્રત્યેકના સમાચાર મેળવતો તે
 માણિબક્ર અને બીજાં વિશ્વસ્ત જનોથી.
 ડોર્ધને યાચક ન અનાવતો
 યાચના કર્યા પહેલાં અર્પણું ઝરીને.
 દીષુપત માનતો હતો તે
 પોતાને શેડ કે સ્વામી મનાવવામાં.
 સૌની મુસીબતો સાંભળવામાં
 ધરીઓના ધસારાને ન ગણુંતો તે.
 સૌની તકલીફને તે
 પોતાની તકલીફના માપે જ માપતો.
 સૌના સ્નેહને જીવાના કરતાં
 પોતાના સ્નેહ સમર્પવામાં

તેને અતીવ મોજ હતી.
 સૌની અનુકૂળતાનો હિસાબ હતો
 તેના હૈયાના ચોખામાં,
 નાહિ કે દ્રોઘની ગણુતરીનો.
 અતીવ મહાન હતો આ સાર્થ
 વસ્તીને વાહનોના પ્રમાણુર્મા.
 વિશેષ વીત્યો હતો સમય
 તેના પ્રયાણુકાલથી.
 વળી લાંબો વર્ષાને સમય
 વટાવવાનો હતો અસ્થાને.
 તાણું પડવા લાગી
 મુસાફરીને યોગ્ય અભાહીની.
 અભતમાં કંદમૂળાદિથી ય નિર્વહતા
 કેંક અતિશાણું સાર્થના સજજને.
 દુઃસ્થતાને ટાળવા
 ઉપાયો યોજના હતા માણિબક્રાદિથી.
 આ વાતને વિહિત કરવા,
 અને અવિશેષ કાલને માટે
 વિશેષ મંત્રણું કરવા,
 માણિબક્ર આવ્યો શેઠની સમીપે
 એક રાત્રિની શરૂઆતના સમયે.
 સાર્થને લોભવવી પડતી હાડમારી
 ધ્યાનપૂર્વક સાંભળી સાર્થવાહે.
 પરિચિત થયો સર્વ પરિસ્થિતિથી એ,
 ને સ્થયન કરાયાં ડેટલાંક.
 પણ એથી ય એને
 પૂરતો સંતોષ ન હતો.
 આની એણે પ્હાડના કરખી
 શારી ય એ હાડમારીને.
 સાર્થનાં દુઃખોને એણે
 પોતાનાં જ દુઃખો માન્યાં.
 મનાઈ પોતાની જ વિષમતા
 કુદરતે કરેલી એ વિષમતા.
 અધૂરી લાગતી હતી એને
 પોતાના તરફથી કરાતી અનુકૂળતાઓ.
 વધારે અનુકૂળતાઓ યોજવાના

અંક ૬]

કેટલાંક પ્રાચીન ઐતિહાસિક સ્થાનો

[૧૮૩]

વિચારણી પરંપરાએ
સત્યથ થયેલો તે
ચિન્તાઅસ્ત બન્ધો હતો.
એ ચિન્તાથી અળગો કરીને
વાતસલ્યભરી મીઠી માની જ્યમ
ઓળામાં લઈ લીધો તેને નિદ્રાએ.
ઉપરના મજલે ચખો નથી તે
ઓળાંગી ડિયાશક્તિનાં સામાન્ય પગથીઓાં.
આભ્યો નથી એ હાલ
નિર્મણતાની નીચવી ભૂમિકાએ.
પાખ્યો નથી એ
જોઈતા વિરોષ પ્રકાશને.
ભિલો છે હજ એ
નૈન્યત્વપ્રાસાદના દ્વારની સન્મુખ.
એમાં પ્રવેશ કરવાની,
એ નિર્મણતાના પ્રકાશને
આવિલાવ કરવાની સુશક્તિ
અને અપૂર્વ લાલુકતા હતી
મિથ્યાત્વનું આખું મલિનપટ ધરાવતા
એ આણુભોલ મહારતનમાં.

ક્રી ને કેટલી છે એમાં
સુષ્પ્યવહારિક ગુણસુનફરતા !
ક્રવા ને કેટલા છે મનહર એના
પ્રાથમિક મૈન્યાહ ભાવેના ભાવ !
ભલેને સ્તો છે એ સાર્થવાહ,
પણ અંતરથી ચેતનવંતો છે,
એ અંતરાત્માના પ્રતિ
સ્વામીને વહીદાર થાનની જ્યમ.
હમણું જ મટી જરો
એની નિદાની અત્યાનતા
અને રાતની મિથ્યાત્વમલિનતા.
નેતનેનામાં પ્રકટરો
નિર્મણતાની સાથે સુપ્રકાશ
એના આત્માની અમર સૃષ્ટિમાં.
આ છે અતુપમ વિસાગે
નિર્મણતાને પ્રકાશતી
અપૂર્વલભ્ય હેલી ભૂમિકામાં પ્લોંયવાનો.
સુખે સુવો !
મહાનુભાવ ! સુખે સુવો !

(ચાહુ)

કેટલાંક પ્રાચીન ઐતિહાસિક સ્થાનો

લેખક-પૂજય ભુનિમહારાજ શ્રી ન્યાયવિજયજી (ત્રિપુરી)
(ગતાંક્ષી ચાહુ)

ચાણુસ્મા—મેં હારીજના પરિયયમાં જણ્ણાખું હતું કે હારીજ જૂનું અને પ્રચિષ્ણ
શહેર છે. તેમજ અહીં બહુ જ પ્રાચીન લભ્ય જિનમાંદિર હતાં કે જેનાં પ્રાચીન અવશેષો
થાડાંક ઉપલબ્ધ છે. તેમાંથી ગામઅહારના કેવલારથલીના શુરુમૂર્તિ વર્ગેના લેખો જેતાં
હારીજનું સ્થાન જરૂર મહત્વનું જ હશે. હારીજથી નીકળી કંઘોઈ થઈ ચાણુસ્મા
જતાં મોટા મંદિરના પાછળના એક મકાનમાં એક શિલાલેખ હતો કે જેને ત્યાંના શ્રીસંધે
બહુ જ સાચવીને સંતારી રાખ્યો હતો. આ લેખની વાત નીકળતાં અમે ત્યાં જઈને જેણો
અને તેની નકલ કરી લીધી. પરિકરની નીચેની ગાઢી ઉપર લેખ આ પ્રમાણે છે:

(૧) ૯ સંવત ૧૨૪૭ બર્ષે × × × શુદ્ધિ ૧૦ શુક્રે ગ-

(મા) રૂલાગ્રામે હારીજગઢે^૧ શ્રીપાર્શ્વનાથદેવજ-

૧ હારીજ ગચ્છના આચાર્ય મહારાજેએ પ્રતિષ્ઠિત મૂર્તિએના લેખો નીચે આખું છું
જે વાંચવાથી આપણું પ્રતીતિ થાય છે કે હારીજગઢે એક પ્રભાવક્ષાલી મચ્છ થઈ ગયો
છે અને તેમાં પ્રાભાવિક આચાર્યો થઈ ગયો છે.

સં. ૧૪૯૪ બર્ષે વૈ. સુદિ શુક્રે ઉસવાલ જ્ઞાં શ્રેણી નરસો(સિં)હ ભા નામલદે૦

१८४]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १०]

(२) गत्यां महाभक्त्या पंडित मानदेवेन विनायकस्य देव-
मूर्तिरदभुता कारापिता ॥ मंगलमस्तु

शु० महिषाल भा. लालु सुत अजउटटा पितृव्य नरपाल उटानिमित्तं (त्तं) पित्रो
[:] श्रेयसे श्रीशान्तिनाथविवं श्रीहारीजगच्छे श्रीमहेश्वरसूरिमिः
(दीर्घीना भैटा भंहिनी धातुप्रतिभानो लेख)

हारीजगच्छीय श्रीमहेश्वरसूरिज्ञना भीज्ज पण्य तथा लेखो सं. १५०१, १५११ अने
१५२८ना छे. १५०१, अने १५११ना लेखमां तेमनु नाम भंहेश्वरसूरिमिः आधुं छे.
परन्तु हारीज्ज गच्छ नाम तो २५४ छे. १५०१ अने १५११ना लेखो जमनगरमां श्री
आदिनाथज्ञना देवासरज्ञमां धातुभूतिंग्गो उपर छे. अने १५२८नो लेख राखनपुरना श्री
शान्तिनाथज्ञना भंहिनांनी धातुभूतिं उपर छे.

(आचीन लेखसंग्रह भाग १ स्व. आ. श्री विजयधर्मसूरिज्ञसंगृहीत.)

सं. १५७७ वर्षे श्रीवासुपूज्यविवं का. प्र. श्री हारीजगच्छे भट्टारक श्री शील-
भद्रसूरिमिः

आवो ज्ज भीने लेख पण्य छे. मात्र श्रीसुविधिनाथविवं आटलो ज्ज इक्के छे. आ
ज्ज आचार्य, आ ज्ज गच्छ, आ ज्ज संवत् एमा छे.

(कडीना लेखो. जैन धातुप्रतिभालेखसंग्रह भाग १. सं. स्व. आ. श्री भुद्धिसागरसूरिज्ञ)

सं. १३८६ वर्षे माघ शु० ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञाऽ पितृ वीकम मात वीलहणदे
श्रेयसे सु० वयरसीहेन श्रीपार्वनाथविवं का० प्र० हारोज (?) गच्छे श्री
महेश्वरसूरिमिः । (जैन धातुप्रतिभालेखसंग्रह भाग भीज्ज, वडोदराना लेखो. पृ. ७)

सं. १५१७ वर्षे मार्गशिर उ गुरो श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठिमांडण भार्या मालहणदे
सुत मणोरसी भार्या माजू सुत नागाकेन पित्रो श्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथविवं का० प्र०
श्रीहारीजगच्छे श्री महेश्वरसूरिमिः सपष्डावास्तव्यः

(जैन धातुप्रतिभालेखसंग्रह भाग भीज्ज, भातरना लेखो. पृ. ८८)

आ श्रीमहेश्वरसूरिज्ञना १४८४, १५०१, १५११ अने १५२८ना ज्ज लेखो आगुण
उपर आध्या छे ते ज्ज आ लागे छे मात्र अहो सापृष्ठावास्तव्य आ वरेषण्य नतु छे.

आ भधा लेखो ज्जेतां तेमी सदीना प्रारंभी हारीजगच्छनी शश्चात थर्थ हो
अने ढेठ सोणभी सदी सुधी आ गच्छनु नाम भक्ते छे श्रेष्ठते लगभग त्रिष्णुसो वर्षथी वधु
समय सुधी आ गच्छनु अस्तित्व रह्युं हो ए अनुमान वधु पड्हु नथी लाग्नु. लगभग
आर सैका गण्यीये तोपण्य याके.

आ सिवाय प्राचीन जैन लेखसंग्रहमां सं. १३३०नो हारीज्ज गच्छीय आचार्यश्री
शीलभद्रसूरिनो. लेख छे. लेखांक ४६१. ए ज्ज शीलभद्रसूरिज्ञनो. १३४३नो लेख
छे एमां हारीजगच्छनो. उल्लेख छे. (लेखांक ४८६). आ ज्ज शीलभद्रसूरिज्ञनो. सं. १३३३
नो लेख छे (लेखांक ४८५) परंतु तेमां हारीजगच्छनु नाम नथी. नीजेनो लेख ज्जशी
धसी आयो. उतारुः छु—

सं. १३५५ वर्षे वैशाख वदि.....हारीजगच्छे पल्लीवालज्ञातीय श्रेत्र जहता
श्रेयार्थ सुत.....श्रीचन्द्रप्रभविवं कारितं प्र. श्रीसूरिमिः

(प्राचीन जैन लेखसंग्रह श्री जिनविजयज्ञ संपादित)

आ लेखमां प्रतिष्ठापक आचार्य हारीजगच्छना छे, ज्यारे श्रावक पल्लीवाल गतीय छे.

અંક ૬]

ક્રિટિકાંક પ્રાચીન ઐતિહાસિક સ્થાનોના

[૧૮૫]

ભાવાર્થ—૧૨૪૭ માં ગા(મા)દ્વારાગામમાં શ્રી હારીજગચ્છીય આચાર્ય પ્રતિષ્ઠિત શ્રી પાર્શ્વનાથપ્રભુના મંદિરની જગતીમાં પંડિત માનહેવે વિનાયકદેવની અદ્ભુત મૂર્તિ કરાવી.

આ ગામ કયાં અભ્યું એની શોધ કરવાની જરૂર છે. પંડિત માનહેવે ડોર્ધ થતિ છે, મહાત્મા છે, કે પૂજારી છે એ પ્રથમો જવાખ પણ બહુ જ શુંચવણું ભર્યો છે. પં. માનહેવે જિનવરેન્દ્ર દેવના મંદિરની જગતીમાં પોતાના છિં ઇપ શ્રી વિનાયકદેવની મૂર્તિ અનાવરાવીને પદરાવી લાગે છે. મને તો આમાં જૈનધર્મના અનુયાયીઓની ઉદારતા, મહાતુભાવતા અને સરલતાની ૨૫૪ છાપ દેખાઈ રહી છે. ડોર્ધ પણ અન્ય ધર્મના—અનૈન મંદિરમાં આવી રીતે જૈનમૂર્તિં ડોર્ધને પદરાવી હોય એવું વાંચવા કે જેવામાં નથી આભ્યું. ત્યારે અહીં જૈન મંદિરની જગતીમાં વિનાયક દેવની—અનૈન દેવની અદ્ભુત મૂર્તિ પદરાવવા દેવામાં આવી છે. બાકી પં. માનહેવે ડોર્ધ છે એનો ધતિહાસ શોધવાની જરૂર છે.

આ સિવાય ચાણુસ્માના મંદિરની પાછળ ભીજા પરિકરણુમાં નીચે મુજબ લેખ છે.

(૧) × × × વैશાખ વાદિ ૪ ગુરૌ જાખણાગ્રામે પ્રાસાદજાલાયા છે. દાહકેન સુતા મરકીએ.

(૨) ચાણુપૂજ્યવિંબ કારાપિતં । પ્રતિષ્ઠિતં શ્રીકમલાકરસ્સરિમિઃ

પરિકર ત્રીજાનો અધિત લાગમાં શ્રીશાન્તિનાથવિંબ કારાપિતં. આટંસુ જ વંચાયું છે.

ત્રણે લેખા પડિમાના લીપીમાં છે. ઉપરના લેખમાં આવેદ જાખણાગ્રામ અત્યારે પણ ચાણુસ્માન પસે જ આવેલું છે.

ચાણુસ્માનું જિનમંદિર બાબ્ય અને દર્શનીય છે. ત્યાં મૂર્તિનાયકજી શ્રી લટેવાપાર્શ્વનાથજીની સુંદર પ્રતિમા છે. દેળું અને છાણુમાંથી અનાવેલી પ્રાચીન મૂર્તિં રમણીય અને દર્શનીય છે. પ્રાચીન તીર્થમાલામાં—

× × × ચાણુસ્માન ધન એ; લટેવિ લગવંત × × ×

(શ્રી. મેલવિજ્યજી ડિપાધ્યાયવિરચિત પાર્શ્વનાથનામમાદા પૃ.—૧૫૦)

ચાણુસ્માનાં ચિહ્ન વડ લયો × × ×

(પં. શ્રી કલ્યાણસાગરજીવિરચિત પાર્શ્વનાથચૈત્યપરિપાઠી)

અર્થાત् ચાણુસ્માનાં બિરજનમાન શ્રી પાર્શ્વનાથ લગવંતની પ્રતિમા અહુ પ્રચિદ્ધ છે.

શ્રી લટેવાપાશ્નાથજીનો સંક્ષિપ્ત ધતિહાસ પ્રગટપ્રભાવી પાર્શ્વનાથમાં આપ્યો છે નેનો સાર નીચે પ્રમાણે છે.

“એક અમણોપાસક મહાતુભાવને એવો દ્વદી નિયમ હતો કે નિરંતર શ્રી જિનબેશર લગવંતની પૂજા કર્યા પણ જ લોજન લેવું, એક પ્રસંગે આ અમણોપાસકને પરદેશ જવાનો પ્રસંગ આભ્યો. રસ્તામાં ખીને દ્વિવસે યાહ આભ્યું કે શ્રી વીતરાગ લગવંતની પૂજા કર્યા સિવાય જમવું નહીં એવો મહારે નિયમ છે તો શું કરવું ? ત્રણ દ્વિવસ સુધીની તો ઉપવાસ કર્યા, પરન્તુ ક્ષયાંય જિનમંદિરનાં દર્શન ન થયાં. ચાલતાં ચાલતાં લટેવા ગમે આભ્યા. તપાસ કરતાં જણાયું કે આટખામાં તો કયાંગે જિનમંદિર નથી. પણ એ મહાતુભાવે તળાવમાંથી મારી અને છાણુ લઈ જિનપ્રતિમા અનાવી, પોતાની સાથે રહેલા અષ્ટ દ્રવ્યથી લક્ષિતપૂર્વક પૂજ કરી ખૂબ આનંદિત થઈ પરમ ભાવના ભાવી. અમણોપાસકની આવી દ્વદી લક્ષિત અને અદ્ધારી પ્રમુદ્દિત થઈ ત્યાં રહેલા ક્ષેત્રપાલ હેવે પ્રસન થઈ જણાયું

डे हुं तारा भक्तिभावनाथी प्रसन्न थयो छुं. तें अनावेल आ जिनप्रतिभा वज्रभय थध जशे. त्यारे आवड कुहुं डे आ तो आपे साइँ कथुं, परन्तु प्रतिभाज्ञे अिराज्ञान करवा भंदिर लोहर्शी अने मारी पासे एटलुं धन नथी. त्यारे हेवे कुहुं तु काले आ रथाने आवडे, तने विपुल धन प्राप्त थरो. भीजे द्विसे आवड त्याँ आओगे. अने तने पुष्टण धननी प्राप्ति थई. पछी भक्तिपूर्वक जिनमंहिर बंधावी प्रभुज्ञे पधराव्या. आवडक्कुण्डे जे प्रतिभाज्ञ जनाव्या हतां ते पाश्चनाथज्ञानं प्रतिभा हतां. भक्तिशी भगवान प्रसन्न थया एम भानी प्रभुज्ञन्तु नाम 'भगविया पार्श्वनाथज्ञ' राख्यु. परन्तु लांभा सभये गमना नाम उपरथो श्री अटेवा पार्श्वनाथज्ञ नाम जाहेर थयु. कहे छे डे आ अटेवा पार्श्वनाथज्ञनी अभत्कारी भूतीं अत्यारे याखुसमामां अिराज्ञान छे. "

आपणे उपर लेयु तेम अटेवा पार्श्वनाथज्ञना तीर्थस्थान दृपे याखुसमा भयहूर थयेलुं छे.

अत्यारे पणु आ प्रतिभाज्ञो २८ एवो ज छे डे आ प्रतिभाज्ञ सामान्य पथथरभांथी नहि किन्तु डोहर अन्य वस्तुभांथी ज अनेल हरो एम लागे छे.

अमे आ भंदिरभांथी भीज लेणो लेताना हता, परन्तु ते वभते झतु एटली प्रतिकुल हती डे अमे लेणो न लाई शक्या. अहींना धातुप्रतिभाज्ञना लेणो पू. पा. रघ. आ. श्री भुविक्षागरस्त्रीश्वरज्ञाये पोताना धातुप्रतिभाज्ञेखसंग्रह भाग पहेलामां आभ्या छे, एमां डेठ तेरभी सहीथी वीसमी सही सुधीना लेणो छे. ए पुस्तकमां लेणो आवेला हेवाथी हु पुनरुक्ति नथी करतो. गामभां उपाश्रय पासे ज प. श्री भणिविजयज्ञ महाराज्ञां पुस्तकोनो संग्रह छे. तेमज आम अहार विद्यावाडी छे डे जे पू. पा. आचार्य श्री विजय-नेमिस्त्रीश्वरज्ञ महाराज्ञाना सहुपहेश्वन्तु इल छे. त्यां नानु रमणीय जिनमंहिर छे. धर्मशाळा छे अने आचार्यांशीना शिष्यरत्नन्तु समाधीस्थान छे.

इपपरना लेणो

अमे याखुसमा गया ते ज द्विसे ऐचार आलडेणे कुहुं: अहीं इपपर सरस गाम छे, त्यां आपणु भंदिर बहु ज सरस अने दर्शनीय छे. थाक्या तो हता ज, छताये अपोरे नीक्या. बालडो साथे हता. चोलीश जिनालयन्तु सुन्दर भंदिर दूरथी ज जेतां परम आल्हाद उपलवेषे छे. उमलावे आ गामभां आलडेनी वस्ती ज नथी. आवडन्तु मात्र एक ज धर छे. पूजारी भावाजु न्हेता,-अहार गया हता. साथेना एक आलडे यावा लावी भंदिर उधाइयु, शुं सुन्दर अन्य प्रतिभाज्ञ ! डेवुं अहस्त जिनमंहिर ! जेणे नानु देवविमान जेतरी आ०यु छेय ! परम शांति, परम शुद्धि अने परम सत्यगुणुताभरी हती. दर्शनाहि करी शिक्षालेख जेवा भाऊया. श्री भूवनायक्ज भगवांतना परिकर उपर नीये प्रभाषे लेख छे.

आ परिकर डोहर भीज भाऊ भूतींनु छे.

(१) ९ संवत् ११२१ श्रीमालवर्कटकुले थारापद्मीय-(धर्मचक्रन्तु चिह्न) संततौ श्रीजपक पारिउहिक × × ग × (को) वहूनिनो नमेः ।

(२) वैराटथानामाभुत्तप्यनी गुणवती तयाकारी ॥ वर्मा (धर्मचक्रन्तु चिह्न) विघ्नमेतम् सहदेहसरण देवार्थ ॥ अ × × गुरु ...

क्षेख पूरा वंचायेन नथी. जे वंचायेन छे, तेमां पणु शंकास्थानो छे, परन्तु संवत्तनो

अंक ६]

डेटलांक प्राचीन ऐतिहासिक स्थानो।

[१८७]

उल्लेख जेतां लगभग एक हजार वर्षे जेटलुं जूनुं आ परिकर ते वर्षतनी सुंदर कारीगरी अने रथनाशिल्पनुं सुंदर प्रतीक छे. वच्ये प्रासाद हेवी छे; अन्ने आजु छाथी छे, पछी अन्ने आजु वाध छे, हेवीनी नीचे धर्मचक्र, अन्ने आजु हरणीयां, वज्रे एवी सुंदर रीते आवेषेक छे डे धडीबर जोई रहेवानुं मन थाय. आजुं परिकर भारतीय प्राचीन नैन शिल्पकलानो सुंदर नमूनो छे.

अभितिमां चोवीश जिननी देवीओ छे. डेटलीक भूतिंओमां अगवन्तनां नामा वंचाय छे: सुभतिनाथजु, विमलनाथजु, यद्ग्रंपलुजु, धर्मनाथजु वगेरे. डेटलीक भूतिंओमां प्रतिष्ठापक आचार्योनां नामो पाणु हेभाय छे: श्री रत्नसिंहसुरि, श्री शांतिसुरि वगेरे. डेटलीक भूतिंओमां देख नथी हेभाता. दोइ भूतिंओमां अन्ने आजुनी डोखीओमां टेका छ. डेटलीक भूतिंओमां नासिङ, छाथ डे पगनी आंगणी घंडित छे. दोइ भूतिंओमां नीचे आसनमां भनोहर दूलवेल डारेकी छे.

वर्तमान भूलनाथकु श्री नभिनाथ अगवाननी गाडीनो देख नीचे मुज्ज्ञ छे:

(१) “संवत् १५३३ वर्षे पा-

(२) षकुण ५ सोमे श्रीश्री

(३) मालज्ञातीय पं. पद्मा भाठ धमकुसुता कर्माइनाम्न्या सुमातृपितृश्चेयोर्थे श्री×× नभिनाथबिंबं कारितं श्रीपूर्णिमापक्षे × × ×

(४) प्रधानशाखायां × य प्रभसूरिणा ५ श्री भुवनप्रभसूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं × सं. स्मृतिः ।

उपरना परिकरनो देख जेतां एम लागे छे डे श्री नभिनाथजु अगवन्तनी विशाल भूतिंनुं ये परिकर छे. अत्यारे विघ्नमान भूलनाथजु पाणु नभिनाथजु अगवन्त छे. इहाय कारणवशात् अथवा तो डोई आसमानी सुलतानीने अंगे प्रतिमाजु अद्वाववां पडयां हो,- होय अने अनु ये ज परिकर राखी नवी भूति भिराजमान डरी होय, परंतु भूलनाथकु ये ज नामना राख्यां छे. आ जिवाय भंडिरल्लनी पाठ्यना नाना अचीयामाथी पाणु एक पथ्थर भव्यो होता नेमां नीचे अभाष्ये देख छे.

॥ गणेशाय नमः ॥

(१) संवत् १७७४ वर्षे जित ५ वर्षे ज्येष्ठ वद ७ सो-

(२) मजे देहरो करावा मांड्यो । राजा

(३) श्रीश्री अजीतसंघजिराजमां

(४) पट्टणसंघपत लहुरी श्री

(५) श्रीरत्नसंघजि सुभ भवतु

(६) पाटणसंघपत भउरीश्री

(७) रत्नसंघजि छे । श्री

आ देख आठ्युं कहे छे-१७७४ मां अहीं भंडिर अंधावा भाँड्यु. अहींना राज-डोकार अजुतसिंहजु छे अने पाठ्यमां था वर्षते संध्यपति रत्नसिंहजु छे. डोकार तो इपपरना ज हो एम लागे छे. कारणु डे पाठ्य तो ते वर्षते मुसलमान सुषेदारना

१८८]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १०

हाथमां होये, अथवा तो एम पण्यु होय के सुमेहारना हाथ नीचे अजुतसिंहजु अहीं उपरी तरीके होय; आकी 'अजुतसिंहजुना राजमा' आ शब्दों ने वधु महारना होय तो अजुतसिंहजु पाठणुनो सुमेहा पण्यु होई शडे. गुजरातना धतिहासप्रेमी साक्षरा आ तरइ लक्ष आपी आ धतिहास उपर प्रकाश नांमे एम. धर्म्म्भूँ छुँ.

गाम अहार जैन गृहस्थीना ऐत्रण्य पालीया पण्यु नेया. आ गृहस्थी दानवीर अने युद्धनीर-शरवीर होता. आगल उपर एक भोडुं तणाव छे. क्षें छे के महाराज सिंहराजे आ तणाव बंधाव्यु छे. बांधणी प्राचीन छे तेमज तेना यारे दिशानां प्रवेश द्वारना दरवाज उपरनी घेडका-आकी अने गरनारांनी बांधणी प्राचीन लागे छे.

गुजरातमां आवां धाण्युये प्राचीन स्थानो छे जे धतिहासविहानी राह जुये छे.

आ लेखो, स्थानपरिचयोनो हेतु पण्यु एज जे के गुजरातना आवां प्राचीन स्थानोने प्रकाशमां सूक्ष्मी शुजरातना भूतकालीन गौरववांता धतिहासमांथी प्रकाशित थती गुजरातनी अस्मिता, गुजरातनुं गौरव अने गुजरातनी महतानां प्रकाशकिरणाथी वर्तमान गुजरात, घुर्हगुजरात अने लारत कंर्द्धक नवीनता अनुभवे.

अहींथी अमे शांखलपुर, अहुचराज, रांधेज वगेरे स्थाने थर्ड भोयणी थर्ड की आव्या. कडीनी प्राचीन धातुमूर्तिना लेखनो परिचय आपवानो विचार होतो, परंतु 'श्री जैन सत्य प्रकाश'ना गतांकमां पंडितरत्न श्रीयुत लालचंद्रभाईनो अतिहासिक शोधपूर्वको लेख वाची आनंद थयो. ए प्रतिमाजु गरे वर्षे जे कडी १८. भू. जैन भोईंगना उद्घाटन समये पूरुहेव श्री दर्शनविजयजु (निपुटी)ना सदुपदेशथो ए भोईंगमां पवरावेल छे. —संपूर्ण.

आ लेखमां नीचेनी हडीकत उभेवानी सूचना धतिहासप्रेमी पू. मु. श्री. ज्यंत-विजयजु तरक्ष्यी पत्रदारा भणो छे ते साकार अहीं आपुं छुँ—

पंचासर गामना झांपानी अंहर ज (हावना उपायनी नज्ञकमां) त्रणु शिखर युक्ता एक जिनालयनु अंडियर जिल्हुं छे. शिखरा तथा भंडपनो टेट्लोइ भाग हजु जिमो छे, टेट्लोइ भाग पडी अथेलो छे. आ स्थान अहु प्राचीन नथी, पण्यु असो वर्णुसो वरसनुं अनेल्हु तो होय ज. आ स्थाननुं कंपाउंड करी लीघेल छे अने ते संघना क्षयजमां छे. तेनो कडअ-चार भरवामां उपयोग करे छे.

हावना श्रीशंभेश्वरजुना भंहिरथी ०।। थी ०।। मार्हिल हूर चंहुरना मार्गे जतां एक उंचाखु टेकरानी तमे जे हडीकत लभी छे, ए ज स्थाने, हावनमां गाममां ने ज्युतु भंहिरनु अंडियर जिल्हुं छे तेनी प्रतिधा श्रीविजयसेनसूरिजु महाराजे सं. १६५२ नी आसपासमां करी हती, ते पहेलानुं भद्रि, ए उंचाखु टेकराने स्थाने होय एम लागे छे.

जूना हारीजमां तमे पथरसनुं मोहुं एक जिनभंहिरनु अंडियर होवानुं लभ्यु छे. तेनी पासे ज पथरना एक नाना जिनभंहिरनु अंडियर पण्यु हुतु. सं. १६८८ मां अमे धन्ने अंडियेरा जेयां होतां. त्यारपछी नवा हारीजमां नहुं भंहिर अनतां त्यांना पथरे. लावीने धाण्या वापर्यां तेथी हवे क्षाय नाना भंहिरनु अंडियर रह्युं नहि होय. आ वर्षते अमो जेवा गया न होता. प्राचीन तीर्थभावायोमां हारीजमां ए जिनभंहिरा होवानुं लभेल छे.

आतरसुंभास्थ श्रीवासुपूज्यजिनविनति

लेखकः—कैथन एन. आर. दाष्टी, I.M.S., I.A.M.C.

कवित्वनी छाडा, के मनभाषक पद्मालित्य वगरतुं सारं प्रायभिक कविता खालुं तहन साही भाषातुं आ विनिकाव्य, आसाम-बरमाना भयानक युद्ध मोरया उपरना लक्षणी साथे डोकटर तरीकेनी फूरज अजवता एक नवल्लुचान गुनराती जैन डाकटरनी इति छे अनी विशिष्टता छे. ज्यां भानवीनी परेपण ज्वन-मरण वच्चे ज्ञालां भाषा छर्ती होय अवा भयानक स्थल अने समयमां पशु पोताना ईष्टहेवतुं स्मरणु करी, ऐ घडी अना पवित्र ध्यानमां रित्तर थष्ट, पोताना ईष्टहेवनी प्रार्थनानी अविव्यजित करतुं आ कालुवेलुं काठ्य पशु अरेखर प्रशंसा भागी दे छे. ८४.

आजथी लगभग सो वर्ष पूर्वे आतरसुंभामां आवडोनी संभ्या सारा प्रभाषुभां (६० थी १०० धरनी) हुती. वैष्णवोनुं वधारे अग अने साधु स-तोनो अछो सहवास-ए अने कारखाने लीघे दिनप्रतिदिन आवडोनी संभ्या धट्टी गर्दू, अने आजे तो भाये अकाह ऐ धर आवडोनां आझी रखां छे. पूजा गोढी करे छे अने डाँडवार अकाह जिनलक्ता अथवा यात्राणु पूजनो लाल ले छे. ज्यारे आवी स्थिति प्रवर्तती हुती त्यारे कपडवंजना आवडो विचार कर्त्ता के शा भाटे भूर्तीने आपशा गाममां लावीने न पधरावी हु जेथी पूजा वगेरे सारी रीत थाय. आ भाटे आवडो भूर्ती लेवा भाटे आतरसुंभामां आव्या, भूर्तीने उपाडवा धणु प्रयत्नो कर्त्ता छतां भूर्ती भूर्ती भूर्ती वजनहार थष्ट गर्दू अने जिडी शक्ति नहि. ओटले आ चमडारिक भूर्ती अत्यारे पशु आतरसुंभाना देरासरमां विद्यमान छे. भूलनायक भारमा तीर्थकर श्री वासुपूज्य स्वामीनी आ भूर्ती छे.

यात्रा भाटे आतरसुंभा जवा भाटे तो भाग्ये ज कपडवंज अने आंतरेली सिवायना श्रावको विचार कर्त्ता हरे. अने यात्रा भाटे आववामां सुरक्षितो धर्शी छे छतां योडाक पशु आविक लक्तोने आ लभाणु उपयोगी थरो तोपशु आनंदित थवा जेवुं छे.

आतरसुंभा जवा भाटे कपडवंज (नरीआह कपडवंज रेखे) स्टेशने बतरबुं पडे छे. त्यांथी वाहननी व्यवस्था करता पडे छे अने बगदगारी अथवा योडा उपर आतरसुंभा जध शकाय छे. वाहन कपडवंज स्टेशने भलवुं सुरक्षेक्ष छे ओटले आगणथी आतरसुंभाना वतनी साथे व्यवस्था करवी पडे छे. कपडवंज पासेना दासलवाडा स्टेशनथी गाम नजदीक पडे छे. अत्रेथी गाम ४ गाउ द्वार छे ज्यारे कपडवंजथी पांच गाउ द्वार छे. दासलवाडा स्टेशन भाटे पशु वाहननी व्यवस्था अगाडिथा कर्त्ता पडे छे. श्रीभंतो भाटे यात्रा सुखभ छे. कपडवंजमां मोटर भली शके छे अने ते आतरसुंभा गमे त्यारे (वधारे वरसाह अने नही, नाणामां रेख होय ते सिवाय) जध शके छे. जता आवताना लाडानी व्यवस्था साथे गाममां नरण चार क्लाक रेकाईने पूजा करीने कपडवंज पाछा आवी शकाय तेवी सगवड भले तेम छे. रहेवा भाटे देरासर साथे एक नानी धर्मशाला छे. अने वासाणु गोदानी व्यवस्था थर्दू शके एम छे, छतां यात्राणुअ चोतानो बिस्तरो साथे लाप्नो ए ढीक छे. स्थल गामनी भध्यमां होवा छतां शांत अने रम्य छे.

ज्ञेनोनी संभ्या अति अद्य होवा छतां गाममां लोडानो देरासर अने प्रलु प्रतिनो

१६०]

श्री जैन सत्य ग्रन्थ

[वर्ष १०

लाव अहु ज सुंदर छे. पर्युषणुना सभये जैनो तेमज जैनेतरो साथे रहिने लावना भूम् उत्त्वासथी करे छे. म्हारा मामा श्री ऐडीदास भुधरहास शाह हंमेशां न्यारे जडर होय छे त्यारे हामोनियम लक्ष्य ने आवे छे अने अक्तिरसमां संगीतनी साथे एार वधारे करवामां भूम् भद्र इप अने छे. पोते अत्यार वैष्णव धर्म पाणता होवा छतां प्रकृष्ट प्रयेनी अक्ति जैन जेटला ज सुंदर लावथी करे छे, अने तेमना संगीतने लीधे हेरासरमां पर्युषणुपणे पठी नोकारथी हर वर्षे थाय छे जेमां जैनो तेमज जैनेतरो संहोजन ग्रेमथी हेरासरनी धर्मशाळामां करे छे.

आ गामथी नाहु गाउ दूर एक शिवमहिर छे, जेनुं नाम उत्कृश्वर महादेव छे, खीजुं स्थण अनेथी ६ गाउ दूर छे अने ते स्थणनुं नाम डेहारेश्वर महादेव छे. डेहारेश्वरमां न्हानी न्हानी पथरनी टेकरीओ. छे जेमांथा पाणयानां झरण्यां वल्लां करे छे. आ पथरोमांथी न देखाय एवी रीते झरणाने वाणवामां आयां छे जे जल शिवलिंगने नवरावीने गौमुख-मांथी व्याहार नीक्को छे. लाविक शिवलक्तो आ स्थणे स्नान करवामां भूम् आनंद भाने छे अने कृतझृत्यता अतुलवे छे. वधुमां अत्रे एवी मान्यता प्रचलित छे के आ स्थण (डेहारेश्वर) ए महालारतमां वर्णवेहुं हेड़बावन छे. डेहुं प्रान्तमां आवी मान्यताओ. होय छे. आसाममां म्हारा निवास हरभ्यान हुं एक स्थणे रहेतो होतो. ए स्थणनुं नाम डिमापुर छे, न्यांथी भनिपुर जवाय छे. आ स्थण अंगाण आसाम रेहनेना भनिपुर रेह स्तेशन उपर आवेहुं छे. आ स्थणे पथरना डेतरेला अहु भेटा स्तंभो छे अने ते माटेनी मान्यता एवी छे. के हेड़बावन आ प्रदेश होतो अने आ पथरनां रमादेंगे ए हेड़बा राक्षसीना महेलना पायाना अवशेषो छे. म्हारा एक भित्र श्रीयुत उत्तम भरिख एम. ए. जेमने ऐतिहासिक संशोधन करवामां धण्युं काम कर्युं छे तेओश्री म्हने जघुवे छे के हेड़बावन ए डेहारेश्वरना आज्ञुआज्ञुनो प्रदेश होवानो. संभव वधारे छे.

उत्कृश्वर महादेवनी उत्पत्ति भाटे एक हंतकथा छे परन्तु आपणुने ते उपयोगी न होवाथी अत्रे तेनु वर्णनुं करतो नथी. आ अने स्थणो तेमनी रम्यताने आतर पण्य निहालवा लायक छे. आतरसुंभाथी वाहननी व्यवस्था थर्ध शके एम छे.

हुं आशा रायुं छुं के आंतरसुंभानो. आ दूंके धतिहास आणुंदल कल्याणुज्ञना संशोधन विलागना कार्यकर्त्ताओने उपयोगी निवडणे.

उपरना दूंके धतिहासनुं निरीक्षणु करतां एम लागे छे के तीर्थस्थानोमां आतरसुंभानु नाम शाले ए अतुचित नहि गणुय.

श्रीवासुपूज्यज्ञन विनति

[१]

(१४-करणु राय तुं क्यांच रे गया.)

जिनज प्रलो! आरमो तुं तो, नमुं त्तेने हुं तो आज हे विलो. १

लक्ति ताहरा एो प्रकृष्ट अहीं, म्हने न दीसता नाथ तो कहीं. २

गाम भाहुं नाथ छे. धण्यु, झुक्के ते प्रकृष्ट शुं कथा कहुं! ३

समय अहु परे नाथ! अहीं हता, श्रावको धण्या लावथी लार्या. ४

[૬૫]

શ્રી વાસુપૂજયજીવ વિનતિ

[૧૬૧]

સાધુ-સન્તનો વેગતો અહીં, પ્રભુ ! થયો હવે મંદ તો સહી. ૫
 પ્રતિદિન પ્રભુ ! ભક્ત તાહરા, ધર્મને ભૂલ્યા નાથ ! શું કહું ? ૬
 છતાં અહીં તથી સ્થાન તો પ્રભુ, બહુ ગમયું હણે નાથ, હે વિલુષ્ટ ! ૭
 ભક્ત તાહરા નગર પાસના, ઈચ્છતા હણે કપડવંજના. ૮
 ગામ આ પ્રભુ અત્રિથી વરયું, આવડોએ ત્યાં ચૈત્ય તો કહું. ૯
 યતન બહુ કર્યા અન્ય લક્ષોએ, પણ જીડે નહીં નાથ મહારો એ. ૧૦
 નગર આ મહીં મંત્ર તાહરા, ભૂલ્યા ધર્યા પ્રભુ ! ભક્ત બાપડા. ૧૧
 નાથ હું પ્રભુ ! મુઢ હું ખરા, સ્તવું હણે હું તો પ્રેમથી પ્રભો ! ૧૨
 તીર્થ સ્થાનોમાં નામ દીપતું, ગામ આતરસુંધાનું ધર્યું. ૧૩
 તાર હું પ્રભુ ! તાર મુજને, વિલંબ ના કરીશ નાથ ! હું હવે. ૧૪
 નાથ હાણુંની પ્રાર્થના સુણી, કર કૃપા પ્રભુ ! તેણા અણી. ૧૫

[૨]

(રાગ-નાગર વેલીએ રોપાવ તહારા રાજમહેદોમાં.)

વાસુપૂજય તો સોહાય, મહારા ગામની માંહે; ૧
 જિનજી ખારમો સોહાય, મારા ગામની માંહે. (એ ટેક.)
 ગામ મહારું છે તુંકું, જે જિનજીને બહુ ગમયું;
 ત્યાં વસે મહારો નાથ, મહારા ગામની માંહે. વાસુપૂજય૦ ૨
 સમય બહુ લગી હતા રહેતા, આવડો લાંબી ધર્યા;
 ત્યાં પ્રભુજી સોહાય, મહારા ગામની માંહે. વાસુપૂજય૦ ૩
 આજ આવક ના દીસે, આ ગામમાં તોચે;
 એકલ સ્થાનમાં દીખે, મહારા નાથ તો આજે. વાસુપૂજય૦ ૪
 કાળયોજે સાધુઓનો, મંદ થાયે આવરો;
 સંખ્યા બહુ ધરી જાય, પ્રભુના લક્ષોની લારે. વાસુપૂજય૦ ૫
 લક્ષો ધર્યા અહીં આવતા, જે સમીપમાં વસતા હતા;
 પ્રભુ ! મૂર્તિ લેવા કાજ, તહારી દુઃખહરનારી. વાસુપૂજય૦ ૬
 આગ્યોદ્યે મુજ ગામના, મૂર્તિ થર્ધ વજનર સમી;
 જીડે ન મહારો નાથ, ડોડી ડોટી ઉપાયે. વાસુપૂજય૦ ૭
 આતરસુંધા શોભતું, ડો તીર્થ સ્થાન સમું સદ્ગ;
 જયાં વસે મહારો નાથ, રમ્ય સ્થાનની માંહે. વાસુપૂજય૦ ૮
 હાણું કરવા સ્તુતિ તહારી, હુજ ચૈત્ય માંહી આવતો;
 હું કરી કરુણા નાથ, એના સાયં તો જોજે. વાસુપૂજય૦ ૯



પ્રવચન-પ્રક્રિમાલા

પ્રોજેક્ટ-પૂજય આચાર્ય મહારાજ શ્રીવિજયપદ્મસુરિજી.

(કર્માંક છે થી ચાલુ)

૫૫ પ્રક્રિમા—સંસારી જીવો આગામી ભવના આયુષ્ણનો બંધ અહીં કચારે કરે?

ઉત્તર—તમામ નારકી, હૈવો, અસંખ્યાતા વર્ષના આયુષ્ણવાળા યુગલિક મનુષ્યો અને તર્યારી પોતપોતાના આયુષ્ણના છેદ્ધા છ મહિનાં આકી રહે ત્યારે આગામી ભવનું આયુષ્ણ બાંધે છે. તથા નિરૂપક્રમ અનપવર્તનીય આયુષ્ણવાળા પૃથ્વીકાળાદિ પાંચ સ્થાવરો, ત્રણ વિકલેન્દ્રિયો તથા પંચેન્દ્રિય જીવો પોતાના આયુષ્ણના એ ભાગ ગયા પછી ત્રીજી ભાગની શરૂઆતમાં આગામી ભવનું આયુષ્ણ બાંધે છે. અને સોપક્રમ આયુષ્ણવાળા તમામ જીવો પોતાના આયુષ્ણના ત્રીજી ભાગે કે નવમે ભાગે કે સત્તાવીશમા કે એકારીભાગે કે ૨૪૭ માં ભાગ બગેરે ભાગમાં આગામી ભવનું આયુષ્ણ બાંધે છે. આ વખતે કદાચ બોલના પરિણામ ન થાય તો ન પણ બાંધે-પરંતુ તે દરેક જીવાને ભરવાની એ ધરી આકી હોય ત્યારે તો બોલના પરિણામ જરૂર થાય, ને તે વખતે પરલભનું આયુષ્ણ જરૂર બાંધે. કારણ કે આગામી ભવનું આયુષ્ણ બંધાયા પછી જ મરણ થાય, એવો નિયમ તમામ સંસારી જીવાને લાયું પડે છે. વિશેષ જીવા—શ્રી પ્રજ્ઞાપનાસૂત્ર, દોક્ષપ્રકાશાદ્ધિમાં જણાવી છે. ૫૫.

૫૬ પ્રક્રિમા—આયુષ્ણની બાધતમાં અસંખ્યાત શરૂદ્દેનો અર્થ શે. કરવો?

ઉત્તર—૮૪ લાખ પૂર્વની ઉપરની સંપ્રચ્છા અસંખ્યાત શરૂદ્દી કેવી, એમ શ્રી કાલ-દોક્ષપ્રકાશમાં મહોપાધ્યાય શ્રીવિનયનિજ્યજી મહારાજે જણાવ્યું છે. ૫૬.

૫૭ પ્રક્રિમા—આગામી ભવના આયુષ્ણને બંધવાની બાધતમાં અપવર્તનીય અને અનપવર્તનીય આ એ બેદ પાડવાનું કારણ શું?

ઉત્તર—ને અધ્યવસાયોથી આયુષ્ણ બંધાય છે તે અધ્યવસાયો એ પ્રકારના હોય છે: ૧ તીવ્ર અધ્યવસાયો અને ૨ મંદ અધ્યવસાયો. તીવ્ર અધ્યવસાયોથી ને આયુષ્ણ બંધાય છે તે આત્મપ્રેરણાની સાથે જાણ સંભ્રંષ્ટ હોવાથી અનપવર્તનીય હોય છે. એટલે તેનો ઉપક્રમથી ધડાડો થતો નથી. ને મંદ અધ્યવસાયોથી બંધાયેલું આયુષ્ણ અપવર્તનીય હોય છે એટલે તે ઉપક્રમથી ધરી જાય છે. આ રીતે અધ્યવસાયો એ પ્રકારના હોવાથી આયુષ્ણના એ બેદો પડ્યા છે. વિશેષ જીવા શ્રીતત્વાર્થીકામાં જણાવી છે. ૫૭.

૫૮ પ્રક્રિમા—પૂજય શ્રીશિવશર્મસુરિ મહારાજે કર્મપ્રકૃતિમાં આયુષ્ણની ઉક્ષર્તાના કંઈ છે. આ પાછના આધારે જણાવ્યું છે કે આયુષ્ણ વધારી શકાય, ને જીજ અંશોમાં જણાવ્યું છે કે આયુષ્ણ વધારી શકાય જ નહિ. આ એ વિચારામાં સત્ય શું છે?

ઉત્તર—કર્મપ્રકૃતિમાં જણાવ્યું છે—‘આવંધા ઉવબૂઝ’ એટલે અંતર્મુહૂર્તમાં આયુષ્ણ બંધાય. આ અંતર્મુહૂર્તપ્રમાણું બંધ કાલમાં ને કંઈ દેરકાર (વધારો કે ધરાડો) થવાનો હોય તે થઈ જાય, તે અંતર્મુહૂર્ત પૂરું થયા બાદ લગાર પણ આયુષ્ણને વધારી શકાય જ નહિ. પણ ઉપક્રમ લાગતો ઓછું તો થાય. ને કારણથી કર્મનાં સ્થિતિ-રસ વધે તે ઉક્ષર્તાના કહેવાય અને સ્થિતિ-રસનું વધવું એ પણ ઉક્ષર્તાના કહેવાય. આ પ્રમાણે કર્મપ્રકૃતિના પાડનું રહસ્ય જણાવું. વળી પૂર્વભવમાં બાંધેલ આયુષ્ણ અહીં ભોગવાય છે—તેનો વધારો આ ભવમાં થઈ શકે નહિ. શાસનનાયક શ્રીમહાવીર દેવે ઈદ્રને રઘુ જણાવી દીખું કે “ને થવાનું છે તે થશે જ. આયુષ્ણને ડોર્ધિનાથી ડોર્ધી પણ ઉપાયે વધારી શકાય જ નહિ.” પ્રક્રિમાં જણાવેલા બંને વિચારો ન્યાનજાણી છે. કર્મપ્રકૃતિનું વચન આયુષ્ણના બંધકાલની

અંક ૬]

પ્રવચન-પ્રક્ષમાલા

[૧૬૩

અપેક્ષાએ વ્યાજખી છે. અને ખીજ અંશેતું વચન—"આયુષ્ણનો પંદ્રકાલ વીત્યા બાદ આયુષ્ણ વધારી શકાય જ નહિ," આ રીતે વ્યાજખી માનવું. વિશેષ જ્ઞાના શ્રીકર્મપ્રકૃતિ, સંવેદમાલાદિમાં જણાવી છે. ૫૮.

૫૯ પ્રક્ષમ—અનાજ વગેરે પદ્ધતીમાં રહેતા તેરને જણુવાનો ઉપાય શે ?

ઉત્તર—એરી પદ્ધતિને જોઈને જો ચડાર પક્ષી આંખ મીંચી હે, હંસ શખ્ષ કરે, મેના ભેલારી કરે, પોપટ વારંવાર વૈંબાટ કરે, વાંદરા વિધા કરે, ડાયક મરી જય, કૌંચ-પક્ષી નાચ કરવા મંડી જય, ને નોળાયો રાજુ થાય, કાગડો મનમાં પ્રીતિ ધારણું કરે, તો સમજ લેવું કે—આ પદ્ધતિ એરી છે—એમ શ્રી ઉપરેશપ્રાસાદ, પ્રક્ષમીમુદ્રા વગેરે અંશેતીમાં જણાયું છે. મહાશ્વરક કવિ ધનપાલને મારવા માટે શત્રુએ રસોડામાં શુમ રીતે એરી લાડવા મૂળી દીવા. ધનપાલ વગેરે એ જણુતા નથી. આ અરસામાં શ્રી શેખન સુનિશ્ચ ઉજાજયિતીમાં વડોરવા પદ્ધતિ. ધનપાલ એરી લાડવા વહેરાવે છે, ત્યારે સુનિરાને લેવાતી ના કઢી. ધનપાલે કારણું પૂછતાં સુનિવરે જણાયું કે ‘આ લાડવા જોઈને ચડાર-પક્ષીએ આંખ મીંચી દીધી, આ ઉપરથી મેં જણી લીધું કે આ લાડવામાં ચોક્સ અર છે.’ આ દ્વીકૃત સાંભળીને ધનપાલે સુનિના વિશિષ્ટ જાનતી જહુ જ અનુમોદના કરીને નૈનધર્મ અંગીકાર કર્યો. ૫૯.

૬૦ પ્રક્ષમ—કોઈ દેવ વગેરે કેવલી ભગવંતોનું સંહરણું કરી શકે ?

ઉત્તર—કેવલી ભગવંતોએ વેદ મોહનીયનો ક્ષય કર્યો છે, માટે કોઈ પણ દેવ વગેરે તેમનું સંહરણું કરી શકે નહિ. કેવલરાન પામ્યા પહેલાં સંહરણુનો નિષેધ કર્યો નથી. એટલે સંહરણું થાય તો સવેલી વગેરેનું થાય. ૧ સાધી, ૨ અવેદી, ૩ પરિહાર વિશુદ્ધિ ચારિત્રવંત સુનિરાનો, ૪ પુસ્તકલભિષ્વવંત જીવો, ૫ અપ્રયત્ન જીવો, ૬ ચૌદ્ધપૂર્વી અને ૭ આદારકલભિષ્વવાળા સુનિરાનો. આ સાતેનું સંહરણું થઈ શકે નહિ—એમ શ્રી ભગવતી દીકા, તત્ત્વાર્થદીકાદિમાં જણાયું છે. ૬૦

૬૧ પ્રક્ષમ—સાધીને નવકલ્પી વિહારની મર્યાદા પાળનાતી જરી કે નહિ ?

ઉત્તર—સુનિઓને ઉદેશને નવકલ્પ વિડાર જણાયો છે. સાધીને ઉદેશને પંચ કલ્પ વિહાર વર્ણાયો છે. ચાતુર્માસિક કલ્પ જ નેનો સરખો હોય છે. શેષ આઠ માસમાં અણે માસનો એક કલ્પ ગણનાં ચાર કલ્પ ગણનાં ચાર કલ્પ અને એક ચાતુર્માસિક કલ્પ આ રીતે પંચકલ્પી વિહાર સાધીને હોય છે, એમ શ્રી વ્યવહારસૂત્ર, પંચકલ્પચૂર્ણી, ખૃદ્ધ-છલ્પચૂર્ણી વગેરેમાં જણાયું છે. ૬૧

૬૨ પ્રક્ષમ—૫૬ દિક્કુમારિકાએ સ્વર્મભાં કથાં રહે છે ?

ઉત્તર—લુચનપતિના દશ લેદોમાં દિક્કુમાર નિકાયમાં તે દિક્કુમારિકાએ રહે છે. એમ શ્રીઆવશ્યકસૂત્રની ભલયગિરિ મહારાને જનાવેલી ટીકા તથા શ્રીજંબૂધીપ્રતુપ્તિની ટીકા વગેરેમાં જણાયું છે. ૬૨

૬૩ પ્રક્ષમ—શીહેવી કેવા પ્રકારની હેવી છે ?

ઉત્તર—તે બંધન નિકાયની અપરિગૃહીતા હેવી છે. ચુલ્લાલિમવંત પર્વતના પદ્મદલમાં પણ તે રહે છે. વિશેષ જીવા આવશ્યકસૂત્રના ચોથા અધ્યયનની ચૂર્ણિમાં જણાવી છે. ૬૩

૬૪ પ્રક્ષમ—અધા તીર્થીકરોનું અવધિતુન એક જરેખું હોય, કે ઓણું વધતું હોય ?

१६४]

श्री नैन सत्य प्रकाश

[वर्ष १०

उत्तर— जे तीर्थंकरने पाछला देव भवमां के नरकमां जेटहु अने जेवु अवधिगान होय, तेटहु अने तेवु अवधिगान लघने अहों छेल्ला भवमां आवे छे, तेथी अधा तीर्थंकर हेवेतु अवधिगान एक सरभुँ, न होय। ६४

इ५ प्रश्न—छेल्ला भवमां अधा तीर्थंकरेतु श्रुतगान एक सरभुँ होय, के योाहु वधतु?

उत्तर— आ श्रुतगाननी आजतमां एवेचा नियम छे कै-ज्यारे श्री तीर्थंकरहेवे पाछला त्रीज भवमां जिननाम कर्मनेः निकाचित करे छे, ते भवमां जे तीर्थंकर हेवने जेटहु श्रुतगान होय तेटहु श्रुतगान तेमने छेल्ला भवमां पण्य होय. आ नियम प्रमाणे श्री ऋषभहेवतु श्रुतगान दादांगी प्रभाष्य हतु, ने बाडीना त्रीजीस तीर्थंकरेतु श्रुतगान-आगीआर अंग प्रभाष्य हतु, एम समजतु. आ वयनने अनुसारे भतिजाननी पण्य व्यवस्था समज लेवी. कारखुँके भति श्रुतगान साथे रहे छे. विशेष यीना श्री आनन्दप्रसादनी दीकामां भलयगिर भडाराजे जणुवी छे. ६५

इ६ प्रश्न— श्री तीर्थंकर हेवा दीक्षा लीधा पछी योाहु जान पामे छे, ते भनःपर्यवशान अधा तीर्थंकर हेवेतु एक सरभुँ होय के योाहु वधतु होय?

उत्तर— अधा तीर्थंकर हेवेतु भनःपर्यवशान होय. जेम केवतगान अधा तीर्थंकर हेवेतु एक सरभुँ होय, तेम योाहु जान पण्य तेवु ज होय. श्रुतगान अवधिगानमां जेवेचा ४२५ होय छे, तेवेचा ४२५ अहों योाथा जानमां न होय. विशेष यीना श्री विशेषावस्थाकाहिमां जणुवी छे. ६६

इ७ प्रश्न— जेम तीर्थंकरो पाछला भवना त्रण जान सहित-अहों छेल्ला भवमां आवे छे, तेम त्रीज भन्य ज्ञवो त्रण जान सहित-आगामी भवमां ज्य के नहि?

उत्तर— श्री तीर्थंकरहेव सिवायना ज्ञवो पण्य पाछला भवना अवधिगान सहित आगामी भवमां ज्य छे. आ आजतमां दृष्टांत ए छे कै-प्रश्नु श्री शांतिनाथ योते आठमा भवमां वजायुध नामना यक्तवर्ती हता. ते पाछला भवतु अवधिगान लघने जन्म्या हता. आ यीना श्री शांतिनाथयरित्राहिमां जणुवी छे. श्री प्रशापनासूत्रना पांचमा पहनी दीकामां अने श्री भगवतीसूत्रना त्रीज शतकना त्रीज उद्देशमां पण्य आ यीना जणुवी छे. ६७

इ८ प्रश्न— रातनो पौष्ट लीधा पछी पाणी पीवाय के नहि?

उत्तर— न पीवाय, कारणु के पौष्ट दंड (पोस्त उच्चरवानो पाठ) उच्चरावती वधते 'आहारपोसहं सव्वओ' एम योादाय छे. तेनो अर्थं ए छे कै-हुं हवे यारे आहारनो. त्याप ठरुं शुं. सवारे जेणे पौष्ट लीधा होय ते अथवा सवारे पौष्ट न लीधा होय ते पण्य रातपोसो. (रात्रि पौष्ट) अहणु करे छे. आ अने प्रकारना पौष्टवाणा ज्ञवेने रातपोसो लीधा पछी पाणी न पीवाय, एम श्री सेनप्रश्नना योाथा उखास वगेरेमां जणुव्यु छे. ६८

इ९ प्रश्न— श्रीस्यामाचार्य श्रीसुधर्मास्वामीज्ञनी पटपरं परामां केटलामी पाटे थ्या?

उत्तर— त्रीजीसमी पाटे थ्या, एम प्रशापनासूत्रनी दीकामां श्री भलयगिरिज्ञामे जणुव्यु छे. ६९

ज० प्रश्न— श्री स्यामाचार्य भडाराजना युरुतु नाम शुं?

उत्तर— दृश्यपूर्वधर श्री उभास्त्वाति वाचक-भडाराज, जेमध्ये प्रशापना सूत ज्ञनाव्यु. एम श्री धर्मसामर उपाध्यायज्ञामे तपामच्छ पटावकीमां जणुव्यु छे. ७०

अंक ६]

प्रवचन-प्रश्नमाला

१६५

७१ प्रश्न—हेवद्विंशिं ज्ञानी क्षमाश्रमणुज पाठ्ला भरमां डोणु हता ?

उत्तर—सौधर्मेन्द्रना पदाति कटकना (पायदण सैन्यना) अधिपति-‘हरिण्युगमेषी’ हेव हता. हेवानंदानी कुक्षिमांथी लघुने प्रलुब्धी महावीर हेवने त्रिशब्दाराणीनी कुक्षिमां स्थापन करनार ते हेव हता, एम श्री कृष्णकिरणावली वगेरेमां जखुाव्युं छे. ७१

७२ प्रश्न—उपधानमां डे पौष्टिमां श्रावके लघुनीति (भावुं) करीने आव्या पठी कृतियावही ज करवा जेहुये डे पठी गमणुभमणुसूत्र पण ऐलवुं जेहुये ?

उत्तर—हरियावही वगेरे प्रकट दोगरस सुधी कहीने गमणुभमणुसूत्र जडूर ऐलवुं जेहुये, एम आयारभयवीर नाभनी प्राचीन सामाचारीमां जखुाव्युं छे. ७२

७३ प्रश्न—निर्ग्रंथगच्छना संस्थापक महापुरुष डोणु हता ?

उत्तर—प्रलुब्धी श्री महावीर हेवना अगीआर गणुधरोमांना पांचमा गणुधर श्री सुधर्मीस्वामीज्ञे निर्ग्रंथगच्छनी स्थापना करी हती, तेथी निर्ग्रंथगच्छना संस्थापक श्री सुधर्मीस्वामी महाराज हता, एम तपागच्छीय पटावली वगेरेमां जखुाव्युं छे. ७३

७४ प्रश्न—आगमेमां श्री सुधर्मीस्वामीज्ञना जन्मादितुं वर्णन कर्दी रीते जखुाव्युं छे ?

उत्तर—१ जन्मस्थल—कैटलाकसंनिशे (गाम), २ जन्मनक्षत्र—उत्तरा ४१०, ३ जन्ममराशी-कृत्या, ४ पिता-धिमत, ५ भाता-भद्रिला, ६ जोन-अजिनवेस्यायन, ७ गृहस्थपणानां वर्ष-५०, ८ छात्रस्थपर्याय-४२ वर्ष, ९ ३१लिपर्याय-८ वर्ष, १० सर्वाव्यष्टि-१००, ११ पांचसो शिष्योना अध्यापक हत, १२ संहेह-ने अहो जेवो होय ते भरीने परब्रह्मां तेवो थाय वगेरे थीना श्रीआवश्यकनिर्दुक्ति-देशनाचिंतामणि वगेरेमां जखुावी छे. ७४

७५ प्रश्न—निर्ग्रंथगच्छ डेट्लामी पाट सुधी आल्यो ?

उत्तर—श्री सुधर्मीस्वामीज्ञथी आह पाट सुधी निर्ग्रंथ नाभयी गच्छ एगाऊयो एम तपागच्छीय पटावली वगेरेमां जखुाव्युं छे. ७५

७६ प्रश्न—डेट्लामी पाटथी डेटिक गच्छनी शळात थर्द ?

उत्तर—श्री सुधर्मीस्वामीथी नवमी पाटे सुस्थितसूरि अने सुप्रतिअङ्गसूरि थया. तेमनाथी प्राचीन निर्ग्रंथगच्छनी ‘डेटिकगच्छ’ ना नामे प्रसिद्ध थर्द, एम पटावली वगेरेमां जखुाव्युं छे. ७६

७७ प्रश्न—निर्ग्रंथगच्छनुं डेटिक नाम पाइयुं. एमां कंध कारणु छे ?

उत्तर—आर्य सुहसितसूरिज्ञना श्री सुस्थित अने सुप्रतिअङ्ग नाभना बंने शिष्योये गणुधरहेव श्री जैतभस्वामीज्ञे कडेला श्री सूरिमंत्रोना जप काकंदी नगरीमां डेऽवार कडो हतो. आ थीना जाणीने राज थेला तीर्थस्विष्ट श्रीसंघे निर्ग्रंथ गच्छने स्थाने ‘कोटिक’ नाम स्थाप्युं, एम श्री तपागच्छीय पटावली वगेरेमां जखुाव्युं छे. ७७

७८ प्रश्न—श्री सुस्थितसूरिज्ञना आयुष्यादिनी थीना डेऽव अंथमां जखुावी छे ?

उत्तर—तपागच्छ पटावलीमां जखुाव्युं छे डे-तेमणे गृहस्थपणे ३१ वर्षनी उंभर वीत्या आह भनीशमा वर्षनी शळातमां दीक्षा लीधी. १७ वर्ष वीत्या आह एट्ले दीक्षा पर्याय १७ वर्षनो थया आह ४८ वर्षनी उंभरे तेओश्री युगप्रधान पदीने पाभ्या. त्यार आह ४८ वर्ष सुधी युगप्रधानपणे पृथ्वीतल उपर विचरी स्व-पर कृत्याखु करी श्री

१६६

श्री जैन सत्य प्रकाश

अंक ६]

वी. नि. सं. ३३६ मां हेवतार्थ ऋद्धिने पाम्या। तेभनु व्याग्रापत्य' नामे गोत्र हुं। आहुकीक्त उभरथी जण्णी शकाय छे कै-तेभनो गृहवास १ वर्ष, संयमपर्याय ६५ वर्ष, अथवा युगप्रधान पद्धति विनाने। संयमपर्याय १७ वर्ष, युगप्रधानपर्याय-४८ वर्ष, सर्वायु-६६ वर्ष हुं। ७८

७८ प्रक्ष—श्री 'ज्ञतमर्यादा' अंथना अनावनार डेखु हुता?

उत्तर—पूज्य श्री श्यामाचार्य महाराजना शिष्य पूज्य श्री सांडिल्य महाराजे 'ज्ञतमर्यादा' अंथ अनाव्यो, एम तपागच्छ पट्टावली वगेरेमां जण्णायुं छे। ७८

८० प्रक्ष—श्री श्यामाचार्य महाराजने। स्वर्ववास कर्द सालमां थयो?

उत्तर—वीर नि. सं. ३३६ मां तेभनो। स्वर्ववास थयो। एम श्रीतपागच्छपट्टावली वगेरेमां जण्णायुं छे। ८०। (याहु)

'आर्य वसुधारा'के सम्बन्धमें विशेष ज्ञातव्य

लेखक-श्रीयुत अगरचन्द्रजी नाहटा, बीकानेर

'श्री जैन सत्य प्रकाश'के गतांकमें डॉ. बनारसीदास जैनका "जैनोंमें धारणीपूजा" शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है उसमें 'आर्य वसुधारा' नामक बौद्ध धारणीकी प्रतियां जैन भंडारोंमें उपलब्ध हैं उस पर प्रकाश डाला गया है। कई वर्ष पूर्व डॉ. साहबने इसकी प्रतियें पंजाबके भंडारोंमें उपलब्ध होने पर मेरेसे विशेष ज्ञातव्य पूछा था और मैंने यथाज्ञात सूचनायें दे दी थी। उक्त लेखसे जो कुछ मुझे विशेष ज्ञातव्य है उसे यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

१. 'आर्य वसुधारा'का मूल बौद्ध पाठ—इसकी एक विशिष्ट प्रति मुझे बीकानेर रियासत वर्ती चुरुकी सुराणा लायब्रेरीमें प्राप्त हुई है जिसमें ६८ पत्र हैं। प्रत्येक पृष्ठमें ४ पंक्तियां हैं। प्रथम पत्रमें उपर नीचेकी दो पंक्तियें स्वर्णाक्षरी एवं मध्यकी रौप्याक्षरी हैं। अक्षर बहुत सुन्दर है। प्रत्येक पंक्तिमें अक्षर नीचे उपरकी पंक्तियोंमें ३८ और मध्य पंक्तियोंमें ३२ अक्षर हैं। अर्थात् ग्रंथाग्रंथ ५७५ के करीब है। पत्र काले रंगके हैं। पीले रंगकी इयाहीसे लिखित होनेसे प्रति बड़ी ही मनोहर दिखलाई देती है। प्रति मेराडी सं. ८०४ में लिखित है, अर्थात् १६ वां शताब्दीकी लिखित है। इसकी आदि-अंत प्रशस्ति आदिके संबंधमें हमने अपने "राजपूतानेकी बौद्ध वस्तुएं" शीर्षक लेखमें दिया है, जो कि 'धर्मदूत' के गत दिसम्बरके अंकमें प्रकाशित है।

२. जैन भंडारोंमें सबसे प्राचीन प्रति—'आर्य वसुधारा'की अद्यावधि मेरे अवलोकनमें करीब ५० प्रतियां आई हैं, जिनमेंसे आधी तो मेरे संग्रहालयमें ही विद्यमान हैं। उन सबमें सं. १५४८ की लिखित हमारे संग्रहकी प्रति ही सबसे प्राचीन है जिसका परिचय इस प्रकार ह—

पत्र ३, पंक्ति ८९, प्रतिपंक्ति अक्षर ५६ करीब, अर्थात् ग्रंथाग्रंथ १५५ के करीब है। लेखनप्रशस्ति—"इति श्रीआर्यवसुधाराधारिणीकल्पः। लिखितश्च ॥ संवत् १५४८ वर्षे

जैसलमेरुपहाड़दुर्गे श्रोखरतरगच्छे श्रीजिनधर्मसूरिपट्टालंकार श्रीजिनचन्द्रसूरिवराणामादेशेन
वा० देवभद्रगणिवरेण । श्रीवसुधारामंत्रशास्त्रमलेखि श्री ॥ ७ ॥ श्री ॥ ”

इसके पीछेकी सं. १६४७-१६९४की लिखित २ प्रतियों जैसलमेरमें देखी थी व
सं. १६७१ की लोंबड़ी भंडारमें है । १८-१९ वीं शताब्दिकी तो अनेक प्रतियों उपलब्ध हैं ।

३. जैन प्रतियोंका पाठ—चौद्ध वसुधाराकी प्रतिका पाठ देखते हुए जैन विद्वानोंने
उसका केवल सार रूप ही अपनाय जात होता है, मूल रूप उयोकात्यां नहीं अपनाया; एवं पीछे से
इसमें परिवर्तन भी होता रहा । अतः जैन भंडारोंकी सब प्रतियोंमें भी पाठ एक समान नहीं
है । कई प्रतियोंमें “लोको भगवतो भाषितमध्यनंदनिति” इन शब्दोंके साथ प्रति समाप्त
होती है तो किसीमें इससे आगे विधि आदि कुछ और भी लिखित है । किसी प्रतियोंमें इसके
मध्यका भाग जिसे ‘लघु वसुधारा’की संज्ञा दी गई है (जिसका प्रारंभ “ॐ नमो रत्नत्रयाय”
शब्दों द्वारा होता है) लिखा मिलता है ।

४. वसुधाराको जैनोंके अपनानेका कारण—डॉ. साहेबने इस सम्बन्धमें जो
अनुमान लगाया है वह समीचीन नहीं ज्ञात होता । कहाजाता है कि हरिभद्रसूरिजीके शिष्य
आते समय इसे बौद्धांसे लाये थे, पता नहीं यह प्रवाद भी कहां तक ठीक है? मेरे नप्र मतानुसार
जब तक कोई जैन यति नेपाल गया था ऐपा प्रमाणित न हो जाय, तब तक यहीं यह रचना
जैनोंको प्राप्त हुई थी, एवं धन मनुष्यका ११ वां प्राण माना जाता है, इसकी चाह किसे नहीं?
अतः श्रावकोंके धन-धान्यादिकी अभिवृद्धिके लिये इसका प्रचार किया—ऐसा मानता उचित है।
जैनोंमें भी अन्य गच्छोंकी अपेक्षा खरतरगच्छमें इसका प्रचार अधिक रहा ज्ञात होता है ।

५. वसुधाराकी प्रतियों—अभीतक मेरी जानकारीमें वसुधाराकी निम्नोक्त प्रतियों जैन
भंडारोंमें प्राप्त हैं—

२५ प्रतियां—हमारे संप्रहमें जिनमें ७ अपूर्ण हैं, कई लघु वसुधाराकी भी हैं ।

१५ प्रतियां—श्रीपूज्य श्री जिनचन्द्रसूरिजीके संप्रहमें है, जिनमेंसे १ में चित्र हैं ।

१० प्रतियां—बोकानेस्के बडे ज्ञानभंडार एवं अन्य संप्रहालयोंमें ।

४ प्रतियां—जयपुरके पंचायती भंडारमें ।

७ प्रतियां—कोटाके पंचायती भंडारमें ।

७ प्रतियांकी सूची लोंबड़ी भंडारसूचीमें प्रकाशित है ।

२ प्रतियां—पाटण भंडारमें हेनेका उल्लेख जैन ग्रंथावलीमें है ।

२ प्रतियां—जैसलमेर भंडारमें सं. १६४७-१६९४ लिखित ।

९ प्रतियां—पंजाब भंडारमें ।

२० के करीब अन्य फुटकर भंडारों एवं यतियोंके पास ।

इस प्रकार करीब १०१ प्रतियां वसुधाराकी उपलब्ध हैं । इससे इसका प्रचार कितना
अधिक रहा यह सहज ज्ञात होता है ।

Shri jaina Satya Prakasha. Regd. No. B. 3801 श्री जैन सत्य प्रकाश।

દરેકે વસાવવા ચોણથી

શ્રી જैન સત્ય પ્રકાશના ત્રણુ વિરોધાંકો

(૧) શ્રી મહાવીર નિર્વાણુ વિરોધાંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામીના લુલા સંબંધી અનેક લેખાથી
સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય છ આના (ટપાલખર્ચનો એક આનો વધુ).

(૨) દીપોત્સવી અંક

ભગવાન મહાવીરસ્વામી પછીનાં ૧૦૦૦ વર્ષ પછીનાં સાતસે વર્ષના જૈન
ધર્મિયાને લગતા લેખાથી સમૃદ્ધ સચિન અંક : મૂલ્ય સના રૂપિયા.

(૩) ક્રમાંક ૧૦૦ : વિઠળ-વિરોધાંક

સમાર્દ વિઠળાહિત્ય સંબંધી જૈતિહાસિક બિજુલિન લેખાથી
સમૃદ્ધ ૨૪૦ પાનાને દળધાર સચિન અંક : મૂલ્ય હાઠ રૂપિયા.

શ્રી જैન સત્ય પ્રકાશના એ વિશિષ્ટ અંકો

[૧] ક્રમાંક ૪૩-નૈનદર્શનમાં ભાંસાઢાર હેઠાના આશોપોના
જ્વાબદ્દપ લેખાથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય ચાર આના.

[૨] ક્રમાંક ૪૫-ક. સ. શ્રી હેમચદ્રાચાર્યના લુલા સંબંધી
અનેક લેખાથી સમૃદ્ધ અંક : મૂલ્ય ત્રણુ આના.

કાચી તથા પાકી ફાઇલો

'શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ'ની વીળ, ચોથા, પાંચમા,
આડમા, નવમા વર્ષની કાચી તથા પાકી ફાઇલો તૈયાર છે. મૂલ્ય દરેકર્ણ
બાચીના એ રૂપિયા, પાકીના અઢી રૂપિયા.

ભગવાન મહાવીરસ્વામીનું નિરંગી ચિત્ર

શુદ્ધરાતના શુભમિલ ચિત્રકાર શ્રી કનુભાઈ હેસાધરે દોરદું શુદ્ધ ચિત્ર. ૧૦" x ૧૪"ની
શાઢી, સોનેરી પોર્ટર. મૂલ્ય ચાર આના (ટપાલ અર્થનો હાઠ આનો).

— લખો —

**શ્રી જૈનધર્મ સત્યપ્રકાશક સમિતિ
નેશિંગલાઈની વાડી, ધીકાંદા, અમદાવાદ.**

સુદક્ષણ:- મગનભાઈ છાટાભાઈ હેસાધર. શ્રી વીરવિજય ગ્રોન્ટીગ પ્રેસ, સલાપોસ ફોસ્ટરેન,
ચો. જો. નં. ૬ શ્રી અક્ષિલમાર્ગ કાર્યાલય-અમદાવાદ. પ્રકાશક:-શ્રીમનલાલ જોઇનદાસ શાસ.
શ્રી જૈનધર્મ સત્યપ્રકાશક સમિતિ કાર્યાલય, નેશિંગલાઈની વાડી, ધીકાંદા રોડ-અમદાવાદ.